



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 4

PART III—Section 4

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 182]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 1, 2004/अग्रहायण 10, 1926

No. 182]

NEW DELHI, WEDNESDAY, DECEMBER 1, 2004/AGRAHAYANA 10, 1926

जल परिवहन विभाग

(भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 नवम्बर, 2004

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अधिनियम, 1985 (1985 का 82) की धारा 35 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय सरकार के पूर्वानुमोदन से, राष्ट्रीय जलमार्ग पर टक्कर निवारण के लिए निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :-

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ-

- इन विनियमों का संक्षिप्त नाम राष्ट्रीय जलमार्ग पर टक्कर निवारण विनियम, 2002 है ।
- ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे ।

2. विस्तार और लागू होना -

- (1) ये विनियम राष्ट्रीय जलमार्गों पर सभी जलयानों को लागू होंगे ।
- (2) सभी जलयान, जो राष्ट्रीय जलमार्गों में चलाए जा रहे हैं, सामान्य नाविक पद्धति और जलयान की सीमाओं द्वारा अपेक्षित पूर्वावधानियों को ध्यान में रखते हुए इन विनियमों का पालन करेंगे ।

अध्याय-1

परिभाषाएं

- इन विनियमों में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,-

(क) "अधिनियम" से भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अधिनियम, 1985(1985 का 82) अभिप्रेत है (ख) "प्राधिकरण" से अधिनियम की धारा 3 के अधीन गठित भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अभिप्रेत है;

(ग) "सक्षम अधिकारी" से प्राधिकरण द्वारा उस रूप में नियुक्त किया गया कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है जो विकास, प्रबंध और अनुरक्षण के लिए किसी राष्ट्रीय जलमार्ग के किसी सेक्शन का भारसाधक हो ;

(घ) "जलयान की लम्बाई और चौड़ाई" से किसी जलयान की अधिकतम लम्बाई और चौड़ाई अभिप्रेत है

- (ड.) "यंत्र नोदित जलयान" से विद्युत, भाप या अन्य यांत्रिक विद्युत शक्ति द्वारा पूर्णतः या भागतः नोदित प्रत्येक वर्णन का जलयान अभिप्रेत है ;
- (च) "चलत जलयान" से नौकायन के अधीन कोई ऐसा जलयान अभिप्रेत है परन्तु जिसमें ऐसी मशीनरी लगी है, जिसका उपयोग नहीं किया जा रहा है ;
- (छ) "चालू मार्गाधीन जलयान" से ऐसा जलयान अभिप्रेत है जो लंगर में नहीं है या जिसे तट पर बांधा या भूग्रस्त नहीं किया गया है ;
- (ज) "मछली पकड़ने में लगा जलयान" से ऐसा जलयान अभिप्रेत है जो जालों, लाइनों, ट्रालों या अन्य मछली पकड़ने के साधनों से, कौशल को निर्बन्धित करता है, मछली पकड़ते हैं ;
- (झ) "जलयान जो कमांड के अधीन नहीं है" से ऐसा जलयान अभिप्रेत है जो कुछ आपवादिक परिस्थितियों में इन नियमों की अपेक्षानुसार कौशल दिखाने में असमर्थ है और इसलिए वह किसी अन्य जलयान को मार्ग से बाहर रखने में असमर्थ है ;
- () "ऐसा जलयान जो अपने कौशल दिखाने में निर्बन्धित है " से ऐसा जलयान अभिप्रेत है जो अपने कार्य की प्रकृति से इन नियमों की अपेक्षानुसार कौशल दिखाने में अपनी योग्यता से निर्बन्धित है और इसलिए, वह किसी अन्य जलयान को मार्ग से बाहर रखने में असमर्थ है । निम्नलिखित जलयान अपना कौशल दिखाने में योग्यता से निर्बन्धित जलयान के रूप में समझे जाएंगे ;
- (i) ऐसा जलयान जो नौवहन चिन्ह, समुद्री केबल या पाइपलाइन बिछाने, उसकी सर्विस करने या उसे उठाने में लगा है,
- (ii) ऐसा जलयान जो ड्रैजिंग, सर्वेक्षण या अंतर्जलीय संक्रियाओं में लगा है,
- (iii) ऐसा जलयान जो ऐसी कर्षण संक्रिया में लगा है, उसे अपने पथ से विचलित नहीं होने देता है,
- (ट) "जलयान" को केवल तभी "एक दूसरे जलयान के दृष्टिगत" समझा जाएगा जब जलयान दूसरे से दृश्यमान रूप से संप्रेक्षित किया जा सकता है ;
- (ठ) "जलयान" से जलयान का ऐसा प्रत्येक वर्णन अभिप्रेत है जिसके अंतर्गत लघु यान, चप्पू या पाल के अधीन जलयान, प्लवन उपस्कर और अविस्थापन क्राफ्ट भी है ;
- (ड.) "निर्बन्धित दृश्यता" से कोई ऐसी दशा जिसमें दृश्यता, कोहरे, धुंध, भारी वर्षा, तूफान या किसी अन्य वैसे ही कारणों से निर्बन्धित है, अभिप्रेत है ;
- (ढ) "नियम" से सड़क के नियम अभिप्रेत हैं,
- (ण) उन शब्दों के, जिनका प्रयोग किया गया है किंतु परिभाषित नहीं हैं, क्रमशः वही अर्थ होंगे जो उनके अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों में हैं ।

अध्याय 2

अभिचालन और चालन नियम

भाग -1

दृश्यता की किसी दशा में जलयानों का संचालन

- 4 लागू होना- इस भाग के विनियम दृश्यता की किसी दशा में लागू होंगे ।
5. अवेक्षक- प्रत्येक जलयान हर समय विद्यमान परिस्थितियों और दशाओं में दृश्य और श्रव्य द्वारा तथा सभी उपलब्ध समुचित साधनों द्वारा एक सूचित अवेक्षक रखेगा जिससे कि स्थिति और टक्कर के जोखिम का पूर्ण मूल्यांकन किया जा सके । जलसरणी चिन्हांकन के लिए उपयोग किये गये प्रदीप्त बिंदु का पता लगाने के लिए जलयानों में सर्चलाइटों का उपयोग करेगा ।
6. सुरक्षित गति- (1) प्रत्येक जलयान हर समय सुरक्षित गति से अग्रसर होगा जिससे कि वह टक्कर और डूबने से बचने के लिए समुचित और प्रभावी कार्रवाई कर सके और विद्यमान परिस्थितियों और दशाओं में समुचित दूरी के भीतर रोका जा सके ।
- (2) सुरक्षित गति अवधारित करने में, निम्नलिखित कारक उन कारणों में से होंगे जिन पर विचार किया जाएगा -
 - (क) सभी जलयानों द्वारा
 - (i) दृश्यता की स्थिति,
 - (ii) यातायात घनत्व जिसके अंतर्गत मत्स्य जलयान या अन्य जलयानों का संकेंद्रण भी है ,
 - (iii) विद्यमान दशाओं में रोकने की दूरी और मुड़ने की क्षमता के प्रति विशेष निर्देश से जलयान की युक्तिचालकता,
 - (iv) नदी, वायु, तरंग और नौपरिवहन परिसंकटों की संभाव्य स्थिति,
 - (v) दिन और रात नौपरिवहन सहायता और जलसरणी चिन्हांकन की स्थिति तथा उपलब्धता
 - (vi) जलमार्ग प्राधिकरण द्वारा अधिरोपित गति निर्बन्धन,
 - (vii) उपलब्ध जल की गहराई के सापेक्ष जलयान का डुबाव,
 - (viii) रातों में पृष्ठाधार बत्ती की उपस्थिति जैसे तट बत्ती से या अपनी ही बत्तियों के पृष्ठ भाग से छितराना,
 - (ख) अतिरिक्त रूप से, संक्रियात्मक राडार सहित जलयान द्वारा
 - (i) विशेषताएं, राडार उपस्कर की दक्षता,
 - (ii) राडार द्वारा पता लगाए गए जलयानों की संख्या अवस्थिति और संचालन, और
 - (iii) दृश्यता का अधिक सही निर्धारण जो तब संभव हो सकेगा जब समीप में डार का उपयोग जलयानों या वस्तुओं की रेंज अवधारण के लिए किया जाता है ।

7. टक्कर का जोखिम (क) यदि टक्कर का जोखिम विद्यमान है तो उसका अवधारण करने के लिए प्रत्येक जलयान विद्यमान परिस्थितियों और दशाओं के समुचित सभी उपलब्ध साधनों का उपयोग करेगा । और यदि कोई संदेह है तो ऐसा जोखिम विद्यमान समझा जाएगा ।

(ख) यदि टक्कर का जोखिम विद्यमान है तो उसका अवधारण करने में निम्नलिखित बातें उन बातों में होंगी जिनको ध्यान में रखा जाएगा -

- (i) ऐसे जोखिम को तब विद्यमान समझा जाएगा जब किसी पहुँचने वाले जलयान पर लगे कम्पास पर कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं होता है तथा अपने जलयान से स्पष्ट दूरी घटती है,
- (ii) ऐसे जोखिम कभी-कभी तब भी विद्यमान होते हैं जब सुबोध परिवर्तन स्पष्ट हो, विशिष्टतया तब जब विशाल जलयान आ रहा हो या किसी का पीछा कर रहा हो या जब आने वाला जलयान सन्निकट रेंज में किसी जलयान का पीछा कर रहा हो, और
- (iii) ऐसे जलयान जिसमें कम्पास फिट नहीं किया गया है, यदि सापेक्ष स्थिति अपरिवर्तित रहती है ।

8. टक्कर से बचने के लिए कार्रवाई - (क) टक्कर से बचने के लिए कोई कार्रवाई यदि स्वीकार किए गए मामले की परिस्थितियाँ सकारात्मक हों, पर्याप्त समय में और अच्छी नाविकता के संप्रेक्षण को ध्यान में रखते हुए, उचित समय में कार्रवाई करेगा ।

(ख) टक्कर से बचने के लिए किसी किनारे या गति में परिवर्तन तब किया जाएगा यदि मामले की परिस्थितियाँ सुकर रूप से दृश्यमान अन्य जलयान की उपलब्धता को स्वीकार करती हैं । किनारे के लघु परिवर्तनों और/ या गति परिवर्तनों से बचना चाहिए ।

(ग) यदि पर्याप्त स्थान है तो पथ परिवर्तन ही किसी सन्निकट क्वार्टर स्थिति से बचने के लिए अति प्रभावी कार्रवाई होगी, परन्तु यह तब जब कि यह उचित समय में की गई हो, सारवान है और इसका परिणाम कोई अन्य सन्निकट क्वार्टर नहीं होता है,

(घ) किसी अन्य जलयान के साथ टक्कर से बचने के लिए की गई कार्रवाई ऐसी कार्रवाई होगी जिसका परिणाम सुरक्षित दूरी पर से गुजरना होगा, कार्रवाई की प्रभाविकता की तब तक सावधानीपूर्वक जाँच की जानी चाहिए जब तक कि अन्य जलयान अन्तिम रूप से गुजर न गया हो या निकल न गया हो

(ङ) टक्कर से बचने के लिए यदि आवश्यक हो या स्थिति का अनुमान लगाने के लिए अधिक समय अनुज्ञात किया गया हो, तो जलयान अपनी गति कम कर देगा या अपने नोदन के साधनों को रोककर या बदलकर मार्ग पकड़ेगा ।

(9) संकीर्ण जलसरणियाँ - (क) संकीर्ण जल सरणी के पथ के साथ साथ अग्रसर होने वाला कोई जलयान जलसरणी के बाह्य सीमा के इतना निकट रहेगा कि जो उसके दक्षिणी पाख पर इस प्रकार हो कि वह सुरक्षित और व्यवहार्य माना जाए । 10 मीटर से कम लम्बाई का कोई जलयान या कोई चलत जलयान किसी ऐसे जलयान के मार्ग को अवरुद्ध नहीं करेगा जिसका चिह्नित जलसरणी के भीतर ही सुरक्षापूर्वक परिवहन किया जा सके ।

(ख) मछली पकड़ने में लगा जलयान नाव्य जलसरणी में किसी अन्य जलयान के मार्ग में बाधा नहीं आलेगा ।

(ग) कोई जलयान किसी नाव्य जलसरणी को पार नहीं करेगा यदि ऐसे पार किए जाने से नाव्य जलसरणी के साथ साथ ऊपरि प्रवाह या अनुप्रवाह में अग्रसर होने वाले जलयान के मार्ग में बाधा उत्पन्न होती है ।

(घ) संकीर्ण जलसरणी में केवल तभी ओवरटेक किया जा सकेगा यदि ओवरटेक किए जाने वाले जलयान को सुरक्षित गुजरने के लिए अनुज्ञा प्राप्त करने के लिए कार्रवाई की जानी हो, ओवरटेक करने के लिए आशयित जलयान विनियम 34(ख) में विहित समुचित संकेतों की ध्वनि बजाकर अपने आशय को उपदर्शित करेगा । ओवरटेक किया जाने वाला जलयान यदि करार में है तो विनियम 34(ख) में विहित समुचित संकेतों की ध्वनि बजाएगा और सुरक्षित गुजरने की अनुज्ञा प्राप्त करेगा । यदि संदेह है तो वह विनियम 34(ग) में विहित संकेत ध्वनि बजाएगा । यह विनियम ओवरटेक करने वाले जलयान को विनियम 13 के अधीन उसकी बाध्यता से निर्मुक्त नहीं करता है ।

(ङ) यदि कोई जलयान किसी बैंड के या संकीर्ण जलसरणी के किसी क्षेत्र के निकट है, जहां अन्य जलयानों को मध्यवर्ती बाधाओं द्वारा बाधित किया जाता है, वह विशिष्ट चेतावनी और सावधानी पूर्वक परिचालन करेगा और विनियम 34(घ) में विहित समुचित संकेत ध्वनि बजाएगा; और

(च) प्रत्येक जलयान, यदि मामले की परिस्थितियाँ अनुज्ञात करती है संकीर्ण जलसरणी में लंगर लगाने में बचेगा ।

10. एकल लेन यातायात - जब एकल लेन यातायात प्रवृत्त हो तब जलयान लेन में केवल तभी प्रवेश करेंगे जब यातायात संकेत ऐसा करने के लिए अनुज्ञात करें । लेन में रहते समय जलयान अधिकतम अनुज्ञेय गति के साथ अग्रसरित होगा और यथासंभव शीघ्र जलसरणी को रिक्त करेगा । जलयान यातायात लेन में न तो रूकेंगे और न लंगर लगाएंगे और लंगर पर प्रतीक्षारत जलयानों के साथ टक्कर से बचने के लिए एकल लेन में प्रवेश करने या उसे छोड़ते समय सावधानी बरतेंगे ।

भाग - 2

जलयानों का एक दूसरे के दिखाई देने पर संचालन -

11. लागू होना - इस भाग के विनियम ऐसे जलयानों को लागू होंगे जो एक दूसरे को दिखाई देते हैं।

12. चलत जलयान - (क) जहां दो चलत जलयान एक दूसरे की ओर इस प्रकार आ रहे हों जिसमें टक्कर की जोखिम अन्तर्वलित हो वहां इनमें से एक दूसरे के मार्ग से निम्नानुसार बाहर रहेगा -

(i) गैर ज्वारीय नदी में जब एक जलयान ऊपरि प्रवाह की ओर अग्रसरित हो रहा है और अन्य जलयान अनुप्रवाह की ओर अग्रसर हो रहा है तो ऊपरि प्रवाह की ओर अग्रसरित होने वाला जलयान अन्य के लिए मार्ग छोड़ देगा।

(ii) जब दोनों ही ऊपरि प्रवाह या अनुप्रवाह की ओर अग्रसरित हो रहे हों और ज्वारीय लगून में हों, तो वह जलयान जो पवनाभिमुख है, वह उस जलयान के लिए मार्ग छोड़ देगा जो अनुवात में है।

(iii) वह जलयान जो मुक्त चल रहा है, वह उस जलयान के लिए मार्ग छोड़ देगा जो क्लोज हाल्ड में है,

(iv) ऐसा जलयान जो पत्तन टैंक पर क्लोज हाल्ड में है वह ऐसे जलयान के लिए मार्ग छोड़ेगा जो दक्षिणी पाख पर क्लोज हाल्ड में है,

(ख) इस विनियम के प्रयोजन के लिए 'ऊपरि प्रवाह' धारा के विरुद्ध दिशा और अनुप्रवाह धारा की दिशा समझी जाएगी। "पवनाभिमुख" पक्ष से वह पक्ष समझा जाएगा जो उसके विरुद्ध है जिस पर मुख्य सेल या दीर्घतम फोर और आफ्ट सेल किया जाता है।

13. ओवरटेक करना - (क) इस भाग के विनियमों में किसी बात के होते हुए भी, किसी अन्य जलयान को ओवरटेक करने वाला जलयान ओवरटेक किए जा रहे जलयान को मार्ग से बाहर रखेगा,

(ख) ऐसे जलयान को ओवरटेक किए जाने वाला जलयान समझा जाएगा जब वह किसी दिशा से अन्य जलयान के साथ अपने बीम के पीछे 22.5 डिग्री से अधिक आ रहा हो अर्थात् ऐसी स्थिति में जिसके प्रति निर्देश से ऐसा जलयान से जिसे वह ओवरटेक कर रहा है, रात में ही वह केवल जलयान की स्टर्न बत्ती और टोइंग बत्ती को देखने में समर्थ होगा न कि उसकी साइड बत्तियों को।

(ग) दो जलयानों के बीच होने वाले पश्चातवर्ती कोई परिवर्तन किसी ओवरटेक करने वाले जलयान को इन नियमों के अर्थान्तर्गत कोई पारगमन जलयान नहीं बनाएगा या ओवरटेक किए गए जलयान को निकासी के उसके कर्तव्य से निर्मुक्त तब तक नहीं करेगा जब तक कि वह अन्तिम रूप से गुजर न जाए और उसकी निकासी न हो जाए।

14. आमने सामने की स्थिति- जहाँ दो यंत्र नोदित जलयान पारस्परिक या लगभग पारस्परिक मार्गों में मिलते हैं जिसमें टक्कर का जोखिम अन्तर्वलित है, प्रत्येक अपना पथ दक्षिणी पाख पर परिवर्तित करेगा जिससे कि वह प्रत्येक पत्तन की दूसरी ओर गुजर सके ।

15. पार करने की स्थिति - जहाँ दो यंत्रनोदित जलयान एक दूसरे को पार कर रहे हों जिसमें टक्कर का जोखिम अन्तर्वलित हो, तो वह जलयान अपने दक्षिणी पाख की ओर है, दूसरा दूसरी ओर है तो वह मार्ग से बाहर रखेगा, यदि मामले की परिस्थितियाँ अनुज्ञात करें तो वह अन्य जलयान से आगे निकलकर जाने से बच सकेगा ।

16. मार्ग देने वाले जलयान द्वारा कार्रवाई - प्रत्येक जलयान जिसे इन विनियमों द्वारा किसी जलयान को मार्ग से बाहर रखने के लिए निदेश दिया जाता है यथासंभव शीघ्र अच्छी निकासी को बनाए रखने के लिए सारवान कार्रवाई करेगा ।

17. - खड़े जलयान द्वारा कार्रवाई -

- (क)(i) इन विनियमों में से किसी विनियम के द्वारा दो जलयानों में से एक जलयान मार्ग से बाहर रहता है, तो अन्य जलयान अपने पथ पर चलेगा और गति बनाए रखेगा,
(ii) तथापि, बाद वाला जलयान जैसे ही उसे यह प्रतीत होता है कि वह जलयान जिसे मार्ग से बाहर रखा जाना है, इन विनियमों के अनुपालन में कार्रवाई नहीं कर रहा है तो वह अपने केवल चाल द्वारा टक्कर से बचने के लिए कार्रवाई करेगा ।

(ख) जब किसी कारण से ऐसा जलयान जिसे अपना पथ और गति बनाए रखना अपेक्षित है और यह पाता है कि वह इतना निकट है कि जलयान को केवल मार्ग देकर ही टक्कर से नहीं बचा जा सकता है तो वह ऐसी कार्रवाई करेगा जो टक्कर से बचने के लिए सर्वोत्तम हो ।

(ग) ऐसे कोई जलयान जो किसी अन्य जलयान के साथ टक्कर से बचने के लिए इस विनियम के उप-पैरा क (ii) के अनुसार स्थिति पार करने में कार्रवाई करता है, यदि मामले की परिस्थितियाँ अनुज्ञात करें तो वह अपने स्वयं के पत्तन की ओर किसी जलयान के लिए पत्तन के पथ को नहीं बदलेगा, और

(घ) यह विनियम मार्ग देने वाले जलयान को मार्ग से बाहर रखने की बाध्यता से निर्मुक्त नहीं करता है।
18. जलयानों का (के बीच) उत्तरदायित्व- सिवाय उसके जहाँ विनियम 9 और विनियम 13 में अन्यथा अपेक्षित हो, -

(क) मार्गाधीन यंत्रनोदित जलयान निम्नलिखित के लिए मार्ग छोड़ेगा -

- (i) कोई ऐसा जलयान जो कमांड के अधीन नहीं है,
- (ii) कोई ऐसा जलयान जिसे उसके चलाने की योग्यता से निर्बन्धित किया गया है,
- (iii) जलयान जो मछली पकड़ने में लगा है,

- (iv) कोई चलत जलयान, चप्पू या देशी नाव के अधीन जलयान, और
- (v) यदि विद्यमान परिस्थितियाँ अनुज्ञात करें ऊपरि प्रवाह की ओर अग्रसरित जलयान द्वारा अनुप्रवाह की ओर अग्रसरित करने वाला कोई जलयान ।
- (ख) मार्गाधीन कोई चलत जलयान निम्नलिखित को मार्ग देगा -
 - (i) कोई ऐसा जलयान जो कमांड के अधीन नहीं है,
 - (ii) कोई ऐसा जलयान जिसे उसके चलाने की योग्यता से निर्बन्धित किया गया है,
 - (iii) ऐसा जलयान जो मछली पकड़ने में लगा है,
- (ग) मछली पकड़ने में लगा जलयान जब वह मार्गाधीन हो तब निम्नलिखित को मार्ग से बाहर रखेगा -
 - (i) कोई ऐसा जलयान जो कमांड के अधीन नहीं है,
 - (ii) कोई ऐसा जलयान जिसे उसके चलाने की योग्यता से निर्बन्धित किया गया है ।

भाग-III

निर्बन्धित दृश्यता में जलयानों का संचालन

19. लागू होना -

- (क) यह विनियम ऐसे जलयानों को लागू होता है जिनका किसी निर्बन्धित दृश्यता क्षेत्र में या उसके निकट आगने सामने नौपरिवहन किया जा रहा हो ;
- (ख) प्रत्येक जलयान जब उसका नौपरिवहन निर्बन्धित दृश्यता क्षेत्र में किया जा रहा हो, विनियम 34 के अनुसार समुचित ध्वनि संकेत देगा और बतियाँ प्रदर्शित करेगा,
- (ग) प्रत्येक जलयान विद्यमान परिस्थितियों और निर्बन्धित दृश्यता की शर्तों के अनुकूल सुरक्षित गति से अग्रसरित होगा । कोई यंत्र नोदित जलयान तुरंत चलने के लिए अपना इंजन तैयार रखेगा ।
- (घ) प्रत्येक जलयान, इस भाग के विनियम का अनुपालन करते समय विद्यमान परिस्थितियों और निर्बन्धित दृश्यता की शर्तों को सम्यक् ध्यान में रखेगा ।
- (ङ.) उसके सिवाय जहां यह अवधारित किया गया है कि टक्कर का जोखिम विद्यमान नहीं है, प्रत्येक जलयान जो अपने बीम पर स्पष्ट रूप से अग्रसर होते हुए दूसरे जलयान का कोहरा संकेत सुनता है या जा अपने बीम पर अग्रसर होते हुए किसी जलयान से टकराने की स्थिति से बच नहीं सकता, अपनी गति कम कर देगा और यदि आवश्यक हो तो वह मार्ग से अलग खड़ा हो जाएगा और किसी भी क्षण टक्कर का खतरा समाप्त होने तक अत्यधिक सावधानी से नौपरिवहन करेगा ।

अध्याय 3

बत्तियाँ और आकार-

20. लागू होना -

- (क) इस अध्याय के विनियमों का सभी मौसमों में पालन किया जाएगा ।
- (ख) बत्तियों से संबंधित विनियमों का सूर्यास्त से सूर्योदय तक अनुपालन किया जाएगा और ऐसे समयों के दौरान कोई अन्य बत्तियाँ प्रदर्शित नहीं की जाएंगी, ऐसी बत्तियों के सिवाय जिन्हें इन नियमों में विनिर्दिष्ट बत्तियों के लिए भ्रमित नहीं किया जा सकता या जो उनकी दृश्यता या सुभिन्न विशेषता को क्षीण नहीं कर सकती हैं या जो समुचित अवेक्षण को बनाए रखने में हस्तक्षेप करती हैं ।
- (ग) इन विनियमों द्वारा विहित बत्तियाँ भी, यदि लगाई जाती हैं, निर्बन्धित दृश्यता में सूर्योदय से सूर्यास्त तक संप्रदर्शित की जाएगी और जब इसे आवश्यक समझा जाए, यह अन्य परिस्थितियों में संप्रदर्शित की जा सकेंगी ।
- (घ) आकारों से संबंधित विनियमों का दिन में ही अनुपालन किया जाएगा ।
- (ङ) इन नियमों में जब तक कि अन्यथा विनिर्दिष्ट न किया जाए, बत्तियाँ और आकार समुद्र पर आकर निवारण अन्तर्राष्ट्रीय विनियम (1972) के उपाबंध 1 के उपाबंधों के अनुसार अवस्थापन और तकनीकी व्यापारों का अनुपालन करेंगे ।

21. परिभाषाएं -

- (क) "मस्तूल शीर्ष बत्ती" से जलयान के केंद्र बिन्दु के अग्रभाग और पिछले भाग पर लगाई गई सफेद बत्ती अभिप्रेत है जो 22.5 डिग्री के क्षितिज के किसी चाप पर निरंतर प्रकाश दर्शित करती है और इस प्रकार लगाई गई हो ताकि जलयान के किसी भी ओर बीम के पीछे 22.5 डिग्री तक दाएं अग्र भाग से प्रकाश दर्शित हो सके । यह बत्ती यथासाध्य पेटा के ऊपर 20 मीटर या अधिक लम्बाई वाले जलयान के लिए 3 मीटर से कम ऊँचाई नहीं होगी और 20 मीटर से कम लम्बाई वाले जलयानों के लिए 2 मीटर होगी ।
- (ख) "साइड लाइट" से दक्षिणी पाख की साइड पर कोई हरी बत्ती और पत्तन साइड पर कोई लाल बत्ती अभिप्रेत है जो प्रत्येक 112.5 डिग्री के क्षितिज के किसी चाप पर निरंतर प्रकाश दर्शित करती है और जिसे इस प्रकार लगाया जाए कि वह अपनी संबंधित साइड पर बीम के पीछे 22.5 डिग्री के दाएं अग्र भाग से प्रकाश दर्शित कर सके, 20 मीटर से कम की लम्बाई वाले जलयान में साइड की बत्तियाँ जलयान के केंद्र बिंदु के आगे और पीछे के भाग पर लगे लालटेन से संयुक्त हो सकेंगी । साइड की बत्तियाँ मस्तूल शीर्ष बत्ती से 1 मीटर से अन्यून से नीचे लगाई जाएगी ।
- (ग) "पिच्छल बत्ती" से 135 डिग्री के क्षितिज के किसी चाप के ऊपर पीछे दर्शित करने के लिए यथासाध्य निकटतम रूप से लगाई गई कोई सफेद बत्ती अभिप्रेत है और जिसे इस प्रकार लगाया गया हो जिससे कि जलयान के प्रत्येक साइड पर पिच्छल बत्ती से 67.5 डिग्री का प्रकाश दर्शित हो सके ।

- (घ) "अनुकर्षण बत्ती" से कोई ऐसी पीली बत्ती अभिप्रेत है जिसकी विशेषताएं वही हैं जो इस विनियम के पैरा (ग) में परिभाषित "पिच्छल बत्ती" की हैं ।
- (ङ) "इर्द गिर्द बत्ती" से ऐसी बत्ती अभिप्रेत है जो 360 डिग्री के क्षितिज के किसी चाप पर निरंतर प्रकाश दर्शित करती है ।
- (च) "कौंध बत्ती" से नियमित अंतरालों की कौंध की कोई बत्ती अभिप्रेत है ।

22. बत्तियों की दृश्यता - इन विनियमों में विहित बत्तियां निम्नलिखित न्यूनतम रैंजो पर दृश्यमान होगी -

- (क) लम्बाई में 20 मीटर या अधिक का कोई जलयान, मस्तूल शीर्ष बत्ती, 3 मील, साइड बत्ती 2 मील, पिच्छल बत्ती 2 मील, अनुकर्षण बत्ती 1 मील,
- (ख) लंबाई में 20 मीटर या अधिक का कोई जलयान, मस्तूल शीर्ष बत्ती, 2 मील, साइड बत्ती 1 मील, पिच्छल बत्ती 2 मील अनुकर्षण बत्ती 1 मील, सफेद, लाल, हरी या पीली चतुर्दिकी बत्ती 1 मील ।

जलयानों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बत्तियां -

23. मार्गाधीन यंत्रनोदित जलयान द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बत्तियां -

- (क) मार्गाधीन कोई यंत्रनोदित जलयान निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा -
- (i) कोई मस्तूल शीर्ष बत्ती अग्र
 - (ii) साइड बत्तियां
 - (iii) पिच्छल बत्ती ।

(ख) 10 मीटर से कम की लंबाई का यंत्रनोदित जलयान पैरा (क) में विहित बत्तियों के स्थान पर चतुर्दिकी सफेद बत्ती प्रदर्शित कर सकेगा और यदि साध्य हो साइड लाइटें या संयुक्त लालटेन भी प्रदर्शित कर सकेगा ।

24. अनुकर्षण और धकेलने वाले जलयानों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बत्तियां - (क) कोई यंत्रनोदि जलयान जब वह अनुकर्षण कर रहा हो या धकेल रहा हो -

- (i) जब अनुकर्षण की लंबाई 200 मीटर से अधिक है, तो लंबवत रेखा में अग्रभाग में दो मस्तूल शीर्ष बत्तियां प्रदर्शित करेगा । लंबवत रेखा में ऐसी 3 बत्तियां प्रदर्शित करेगा । ये बत्तियां विनियम 23(क) में विहित बत्तियों के स्थान पर होगी । बत्तियां 1 मीटर से अन्यून की दूरी पर अलग अलग लगाई जाएंगी और पोतखोल के ऊपर सबसे नीचे लगाई गई बत्ती की उंचाई दो मीटर से कम नहीं होगी ।

- (ii) साइड लाइटें ।
- (iii) पिच्छल बत्ती ।
- (iv) पिच्छल बत्ती के ऊपर लंबवत रेखा में कोई अनुकर्षण बत्ती

(ख) जब धकेलने वाला जलयान और आगे की ओर धकेले जाने वाला जलयान किसी संयुक्त यूनिट में संयोजित हैं, तो उन्हें यंत्रनोदित जलयान के रूप में समझा जाएगा और विनियम 23 में विहित बत्तियां प्रदर्शित की जाएगी ।

(ग) ऐसा कोई जलयान या वस्तु जो अनुकर्षित की जा रही है, निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा -

- (i) साइड लाइटें ।
- (ii) पिच्छल बत्ती ।

परंतु किसी समूह में अनुकर्षित किए जा रहे या धकेले जा रहे जलयानों की कोई संख्या एक ही जलयान के रूप में प्रकाशित की जाएगी ।

(घ) आगे धकेले जाने वाले कोई जलयान को जो संयुक्त यूनिट का भाग नहीं है, वह अग्र सिरे पर साइड बत्तियां प्रदर्शित करेगा ।

(ड.) किसी एक अनुकर्षित किए जा रहे जलयान पर पिच्छल बत्ती, अग्रभाग में सिरे की साइड बत्तियां प्रदर्शित की जाएगी ।

(च) जहां किसी पर्याप्त कारण से, अनुकर्षित किए जा रहे जलयान या किसी वस्तु के लिए यह असाध्य है कि इस विनियम में विहित बत्तियां प्रदर्शित की जाएं, वहां जलयान या वस्तु पर बत्तियां लगाने के लिए सभी संभव उपाय किए जाएंगे जिससे कि कम से कम बिना बत्ती वाले जलयान या वस्तु की विद्यमानता उपदर्शित हो सके ।

25. चलत जलयान और चप्पू के अधीन जलयानों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बत्तियां -

- (क) चलत जलयान निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा -
- (i) साइड बत्तियां
- (ii) पिच्छल बत्ती

(ख)) 20 मीटर से कम की लंबाई के चलत जलयान में पैरा (क) में विहित बत्तियां एक लालटेन में संयुक्त होंगी और मस्तूल पर या उसके सिरे के निकट जहां से इन्हें देखा जा सके, लगाई जाएंगी ।

(ग) मार्गाधीन कोई चलत जलयान इस विनियम के पैरा (क) में विहित बत्तियों के अतिरिक्त मस्तूल पर उसके सिरे के निकट बत्तियां प्रदर्शित करेगा जहां वे किसी लंबवत रेखा में दो चतुर्दिकी बत्तियों के रूप में अच्छी तरह देखी जा सकेंगी, ऊपर लाल और नीचे हरी होगी ।

(घ) 10 मीटर से कम की लंबाई के किसी चलत जलयान में चप्पू के अधीन जलयान में इस विनियम में विहित बतियां प्रदर्शित की जा सकेंगी किंतु यदि वे ऐसा नहीं करता है तो उसके पास विद्युत टार्च या प्रज्वलित लालटेन तत्काल उपलब्ध होगी जिसमें सफेद प्रकाश प्रज्वलित होगा जो टक्कर के निवारण के पर्याप्त समय पूर्व प्रदर्शित होगा ।

26. मछली पकड़ने में लगे जलयानों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बतियां - (क) मछली पकड़ने में लगे जलयान निम्नलिखित प्रदर्शित करेंगे -

- (i) लम्बवत रेखा में दो चतुर्दिकी बतियां जिनमें से ऊपर की लाल और नीचे की सफेद होगी और दिन के दौरान दो शंकुओं वाले आकार के सिरे उसी लंबवत रेखा या बास्केट के बने होंगे ।
- (ii) जब जलमार्ग से गुजर रहे हों,
- (iii) में विहित बतियों के अतिरिक्त साइड लाइटों और पिच्छल बतियां,

(ख) 10 मीटर से कम की लंबाई का कोई जलयान, चप्पूओं के अधीन कोई जलयान, कोई लालटेन प्रदर्शित कर सकेंगे और तत्काल उपलब्ध कोई विद्युत टार्च होगी जो टक्कर को टोकने के लिए पर्याप्त समय में प्रदर्शित की जाएगी ।

27. ऐसे जलयानों, जो कमांड के अधीन नहीं हैं, या युद्धाभ्यास में उनकी योग्यता निर्बन्धित है, द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बतियां -

- (क) ऐसा कोई जलयान जो कमांड के अधीन नहीं है, निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा,
 - (i) लंबवत रेखा में दो चतुर्दिकी लाल बतियां जहां वे निरंतर रात्रि के दौरान अच्छी तरह देखी जा सकती हैं,
 - (ii) दिन के दौरान किसी लंबवत रेखा में दो बाल्स या वैसे ही आकार में,
 - (iii) जब जलमार्ग से गुजरना हो तो (i) में विहित बतियों के अतिरिक्त साइडों की पिच्छल बतियां,
- (ख) ऐसा जलयान जिसे युद्धाभ्यास की योग्यता में निर्बन्धित किया गया है, निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा,
 - (i) लम्बवत रेखा में तीन चतुर्दिकी बतियां, इनमें से उच्चतम और निम्नतम लाल होगी और मध्यम बत्ती सफेद होगी,
 - (ii) लम्बवत रेखा में 3 आकार, उच्चतम और निम्नतम आकार बाल्स होंगे और मध्यम समचतुर्भुज,
 - (iii) जब जलमार्ग से गुजरना हो तो (i) में विहित बतियों के अतिरिक्त साइडों की पिच्छल बतियां,
 - (iv) जब लंगर लगा हो, लंगर लगाए गए जलयानों के लिए ऊपर (i) और (ii) में विहित बतियों के अतिरिक्त विनियम 30 में विहित बतियां और आकार भी प्रदर्शित किए जाएंगे ।

28. निकर्षण में लगे जलयान द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बतियां - निकर्षण में लगा जलयान 27(ख) में बतियों के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा - उस दिशा को उपदर्शित करने के लिए जिस पर बाधा विद्यमान है, लम्बवत रेखा में दो निरंतर लाल बतियां या दो बाल्स ।

29. पाइलट जलयान द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बत्तियां - वह जलयान जो पाइलेट ड्यूटी पर लगाया गया है, निम्नलिखित प्रदर्शित करेगा -

- (i) मस्तूल शीर्ष पर या उसके निकट लम्बवत रेखा में दो चतुर्दिकी बत्तियां ऊपर की बत्ती सफेद और नीचे की बत्ती लाल,
- (ii) जब मार्गाधीन हो, अतिरिक्त साइड और पिच्छल बत्तियां ।

30. लंगर लगाए गए जलयानों और भूग्रस्त जलयानों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बत्तियां - (क) लंगर लगाए गए जलयानों पर निम्नलिखित प्रदर्शित किया जाएगा -

- (i) अग्र भाग में, दिन के दौरान चतुर्दिकी सफेद बत्ती या लाल,
- (ii) पिच्छल और निम्न स्तर पर या उसके निकट चतुर्दिकी कोई सफेद बत्ती,

(ख) 20 मीटर से कम की लंबाई का जलयान एक चतुर्दिकी सफेद बत्ती प्रदर्शित कर सकेगा जो अच्छी तरह दिखाई दे,

(ग) कोई भूग्रस्त जलयान पैरा (क) या (ख) में विहित बत्तियों के अतिरिक्त बत्तियां प्रदर्शित करेगा जो अच्छी तरह दिखाई दे -

- (i) लम्बवत रेखा में दो चतुर्दिकी लाल बत्तियां,
- (ii) दिन के दौरान लम्बवत रेखा में तीन लाल,

(घ) 10 मीटर से कम लंबाई के जलयान में एक विद्युत टार्च या प्रदीप्त लालटेन तुरंत उपलब्ध रखी जाएगी जो सफेद प्रकाश दर्शित करेगी जो अनुगमन करने वाले जलयान को पर्याप्त समय में चेतावनी देने के लिए प्रदर्शित की जाएगी ।

31. जलपत्रक और यांत्रिक देशी यान द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बत्तियां - जहां किसी यांत्रिक देशी यान या जलपत्रक यान को विनियमों में विहित लक्षणों या स्थितियों में की बत्तियों और आकारों को प्रदर्शित करना असाध्य हो वहां वह यथासंभव ऐसी बत्तियां और आकार जो लक्षणों में और अवस्थिति में पूर्णतः समान हों, प्रदर्शित करेगा ।

अध्याय 4

ध्वनि और प्रकाश संकेत

32. परिभाषाएं (क) "सीटी" शब्द से कोई ध्वनि द्वारा संकेत देने वाला साधित्र अभिप्रेत है जो विहित तूर्यनाद उत्पन्न करने में समर्थ हो,

- (ख) "लघु तूर्यनाद" शब्द से ऐसा कोई तूर्यनाद जो लगभग एक सेकंड की अवधि का हो,
- (ग) "दीर्घावधि तूर्यनाद" शब्द से लगभग चार से छह सेकंड की अवधि का तूर्यनाद अभिप्रेत है,
- (घ) जब तक कि विनियमों में अन्यथा विनिर्दिष्ट न हो, ध्वनि संकेत साधित्र समुद्र में टक्कर निवारण के लिए अंतर्राष्ट्रीय विनियम, 1972 के उपाबंध 3 के उपबंधों के अनुसार तकनीकी अपेक्षाओं का अनुपालन करेंगे।

33. संकेत ध्वनि के लिए उपस्कर - 20 मीटर या अधिक लंबाई वाले जलयान पर एक सीटी और एक घंटी की व्यवस्था की जाएगी और 100 मीटर या अधिक की लंबाई वाले किसी जलयान पर इनके अतिरिक्त एक घड़ियाल की व्यवस्था की जाएगी। 34. युद्धाभ्यास और चेतावनी संकेत - (क) एकल जलयान, जब जलयान एक दूसरे को दिखाई देने की स्थिति में हो, मार्गाधीन कोई यंत्रनोदित जलयान, जब प्राधिकृत या इन नियमों द्वारा अपेक्षित युद्धाभ्यास कर रहा है, वह अपनी सीटी पर निम्नलिखित संकेतों द्वारा अपना आशय उपदर्शित करेगा।

- (i) एक लघु तूर्यनाद का अर्थ है "मैं दक्षिणी पाख की ओर अपना पथ बदल रहा हूँ।
- (ii) दो लघु तूर्यनाद का अर्थ है " मैं पत्तन की ओर अपना पथ बदल रहा हूँ।
- (iii) तीन लघु तूर्यनाद का अर्थ है " मैं पिच्छल प्रणोदन प्रचालित कर रहा हूँ"।

(ख) ओवरटेकिंग जलयान -

- (i) एक लघु तूर्यनाद के पश्चात् होने वाले दो दीर्घावधि तूर्यनाद से "मेरा आपको दक्षिण पाख पर ओवरटेक करने का आशय है",
- (ii) दो लघु तूर्यनाद के पश्चात् होने वाले दो तूर्यनाद से " मेरा आपको पत्तन की ओर ओवरटेक करने का आशय है",

वह जलयान जिसको ओवरटेक किया जा रहा है, अपनी सीटी पर एक दीर्घावधि, एक लघु अवधि, एक दीर्घावधि, एक लघु तूर्यनाद इस क्रम में संकेतों का अनुसरण करते हुए अपनी सहमति उपदर्शित करेगा, यदि संदेह है तो वह पैरा (ग) में विहित संकेत तक ध्वनि बजाएगा।

(ग) जब संदेह हो, जहां एक दूसरे को दिखाई पड़ने वाला जलयान एक दूसरे का पीछा कर रहे हैं और किसी कारण से कोई भी जलयान दूसरे के आशय या कार्रवाई को समझने में असफल रहता है या यह संदेह है कि दूसरे द्वारा टक्कर से बचने के लिए पर्याप्त कार्रवाई की जा रही है या नहीं, संदेह वाले जलयान का तुरंत सीटी पर कम से कम 5 लघु और त्वरित तूर्यनाद करके ऐसा संदेह उपदर्शित करेगा। संकेत की कम से कम 5 लघु और त्वरित कौंधने वाले प्रकाश बत्तियों से अनुपूर्ति की जा सकेगी।

(घ) मोड़ पर - कोई जलयान मोड़ के निकट है या जलसरणी के क्षेत्र में है, जहां अन्य जलयान दुर्बोध हो जाते हैं वहां एक दीर्घावधि तूर्यनाद की ध्वनि होगी, ऐसे संकेत का किसी पीछा करने वाले जलयान द्वारा लघु तूर्यनाद द्वारा किया जाएगा ।

35. निर्बन्धित दृश्यता में ध्वनि संकेत - निर्बन्धित दृश्यता में या उनके निकट क्षेत्र में जहां दिन या रात्रि के लिए इस विनियम में संकेत विहित किया गया है, उनका निम्नानुसार उपयोग किया जाएगा -

(क) जल से गुजरने वाला कोई यंत्रनोदित जलयान दो मिनट से अनधिक के अंतराल पर एक दीर्घावधि तूर्यनाद की ध्वनि करेगा,

(ख) कोई यंत्रनोदित जलयान जो मार्गाधीन है किंतु रोक दिया गया है और जल से नहीं गुजर रहा है, वह दो मिनट के अंतराल पर ध्वनि करेगा । उनके बीच में 2 सेकंड से अंतराल पर उत्तरवर्ती दो लघु तूर्यनाद,

(ग) ऐसा कोई जलयान जो कमान के अधीन नहीं है, कोई जलयान जिसे युद्धाभ्यास योग्यता से निर्बन्धित किया गया है, ऐसा जलयान जो दबाव से ग्रसित है, ऐसा जलयान जो कर्षण में लगा है, मत्स्य या एक दूसरे को धकेलने वाले जलयान दो मिनट से अनधिक के अंतराल पर तीनों उत्तरवर्ती तूर्यनाद अर्थात् दो लघु तूर्यनादों द्वारा अंतरित और एक दीर्घावधि तूर्यनाद करेंगे ।

(घ) लंगर का कोई जलयान एक मिनट से अनधिक के अंतराल पर लगभग 5 सेकंड के लिए तीव्रता से घंटी बजाएंगे । लंगर का कोई जलयान इसके अतिरिक्त तीन उत्तरवर्ती तूर्यनाद अर्थात् एक लघु, एक दीर्घावधि और एक लघु तूर्यनाद अपनी स्थिति और किसी पीछा करने वाले जलयान को टक्कर की संभाव्यता के संबंध में चेतावनी देने के लिए करेगा । भूग्रस्त कोई जलयान त्वरित घंटी बजाने के तुरंत पूर्व और पश्चात् घंटी पर तीन पृथक और सुभिन्न प्रहार करेंगे ।

(ङ) 10 मीटर से कम लंबाई वाले किसी जलयान को ऊपर वर्णित संकेत देने के लिए बाध्य नहीं किया जाएगा किंतु दो मिनट से अनधिक के अंतरालों पर कुछ अन्य प्रभावी संकेत बजाएगा ।

36. विपत्ति संकेत - जब कोई जलयान विपत्ति में है और किसी अन्य जलयान से या तट से सहायता की अपेक्षा करता है, तो उसके द्वारा साथ साथ या पृथक रूप से निम्नलिखित संकेत उपयोग में लाए जाएंगे या संप्रदर्शित किए जाएंगे -

(क) किसी ध्वनि संकेत साधित्र की निरंतर ध्वनि बजाना,

(ख) ध्यान आकर्षित करने के लिए ध्वज या प्रकाश को किसी सर्किल में हिलाना,

(ग) डेक पर प्रदीप्ति,

(घ) रेडियो टेलीफोनी द्वारा पारेषित, "मई दिवस",

(ङ) जलयान पर फहराए गए सिगनल एन०सी० का अंतर्राष्ट्रीय संकेत ।

अध्याय 5 छूट

37. कोई जलयान या (जलयानों का वर्ग) में यह उपबंध है कि वह अंतर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 की अपेक्षाओं का पालन करेगा, जिसका नौतल इन विनियमों के प्रवृत्त होने से पूर्व सन्निर्माण के समरूपी प्रक्रम पर है, निम्नलिखित उपबंधों से इन विनियमों के प्रवृत्त होने की तारीख के पश्चात् दो वर्ष तक अनुपालन से छूट दी जा सकेगी -

- (क) विनियम 20 (ड.) में यथाविहित रंग विनिर्देश और सघनता सहित बत्तियों का प्रतिष्ठापन,
- (ख) विनियम 21 के विहित किए जाने के परिणामस्वरूप जलयान पर मस्तूल शीर्ष बत्तियाँ और साइड की बत्तियाँ पुनः लगाना,
- (ग) विनियम 22 में विहित रेंजों सहित बत्तियों का प्रतिष्ठापन ।

38. छूट-

जलयानों या जलयानों के वर्ग में छूट में यह उपबंध है कि वह (अंतर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917) की अपेक्षा का अनुपालन करता है, उसका नौतल जो इन विनियमों के प्रवृत्त होने से पूर्व सन्निर्माण के समरूप प्रक्रम पर है, जीवन रक्षक नावों के अभिवहन के लिए उपबंध का अनुपालन इन विनियमों के प्रवृत्त होने की तारीख के पश्चात् दो वर्ष तक छूट दे सकेगी परंतु यह कि इसके बदले पर्याप्त जीवन रक्षक बेड़े फलक पर उपलब्ध करा दिए जाएं ।

- (क) मत्स्य नावें ;
- (ख) स्थोरा जलयान

अध्याय 6

निलम्बन, रद्दकरण और अपील

39. सर्वेक्षण प्रमाणपत्र पर पृष्ठांकन को निलम्बित और रद्द करने की शक्ति -

(1) सक्षम अधिकारी को तुरत जलयान के सर्वेक्षण प्रमाणपत्र पर पृष्ठांकन को प्रथम बार इसमें वर्णित विनियमों में से किसी के उल्लंघन की दशा में पंद्रह दिन से अनधिक की अवधि के लिए निलम्बित करने का अधिकार होगा ।

(2) बार बार उल्लंघन की दशा में सक्षम अधिकारी जलयान के सर्वेक्षण प्रमाणपत्र के पृष्ठांकन को तुरंत रद्द करने की शक्ति रखता है ।

40. अपील -

(1) विनियम 3 के अधीन जारी सक्षम अधिकारी के किसी आदेश से व्यक्ति को व्यक्ति उस तारीख से जिसको वह ऐसा आदेश प्राप्त करता है, दस दिन के भीतर उसके विरुद्ध इस प्रकार अभिहित अधिकारी को अपील कर सकेगा ।

(2) इस प्रकार अभिहित अधिकारी ऐसे प्रत्येक अपील का नोटिस सक्षम अधिकारी को ऐसी रीति में दिलवाएगा जो विहित की जाए और सक्षम अधिकारी को एक अवसर दिए जाने और अपीलार्थी को सुने जाने के पश्चात् उस पर ऐसा आदेश पारित कर सकेगा, जो वह ठीक समझे और उसका विनिश्चय अंतिम होगा ।

अध्याय 7

शास्तियां और विधिक कार्यवाहियां

41. राष्ट्रीय राजमार्ग के लिए सड़क के विनियमों का उल्लंघन करने के लिए शास्ति यदि कोई व्यक्ति इसमें इसके पूर्व यथावर्णित सड़क के विनियमों में से किसी का उल्लंघन करता है, वह ऐसे जुर्माने को जो प्रत्येक उल्लंघन के लिए पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।

42. अंतर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1) के उपबंधों का लागू होना - ऊपर वर्णित किसी बात के होते हुए भी, अंतर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1) के अध्याय 7 के उपबंध आवश्यक परिवर्तनों सहित राष्ट्रीय जलमार्ग पर जल यात्रा करने के लिए यंत्रनोदित जलयानों को उसी प्रकार लागू होंगे जैसे वे किसी अंतर्देशीय जल में यंत्रनोदित जलयानों को लागू होते हैं ।

एस. एस. पॉण्डियन, सचिव

[विज्ञापन III/IV/306/04-असा.]

MINISTRY OF SHIPPING**(Inland Waterways Authority of India)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 30th November, 2004

In exercise of the powers conferred by Section 35 of the Inland Waterways Authority of India Act, 1985 (82 of 1985), the Inland Waterways Authority of India, with the prior approval of the Central Government, hereby makes the following regulations for prevention of collision on national waterways, as under, namely :—

- 1. Short title and commencement:-** (1) These regulations may be called the Prevention of Collision on National Waterways Regulations, 2002.
(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- 2. Scope and application:-** (1) These regulations shall apply to all vessels on the National Waterways.
(2) All vessels plying in the National Waterway shall be adhere to these rules having regard to precautions required by the ordinary practice of Seamen and limitations of the vessel.

CHAPTER – I**DEFINITIONS**

- 3. In these regulations, unless the context otherwise requires -**
 - (a) "Act" means the Inland Waterways Authority of India Act, 1985 (82 of 1985);
 - (b) "Authority" means Inland Waterways Authority of India constituted under section 3 of the Act;
 - (c) "Competent Officer" means an officer appointed as such by the Authority to be in incharge of a section of the National Waterways for the development, management and maintenance;

- (d) "Length and breadth of a vessel" means maximum length and breadth of a vessel;
- (e) "Mechanically propelled vessel" means every description of vessel propelled wholly or in part by electricity, steam or other mechanical power;
- (f) "Sailing vessel" means any vessel under sail provided that propelling machinery if fitted, is not being used;
- (g) "Underway" means a vessel is not at anchor or made fast to the shore or aground;
- (h) "Vessel engaged in fishing" means any vessel fishing with nets, lines, trawls or other fishing apparatus which restrict maneuverability;
- (i) "Vessel not under command" means a vessel, which through some exceptional circumstances is unable to manoeuvre as required by these rules and is therefore unable to keep out of the way of another vessel;
- (j) "Vessel restricted in her ability to manoeuvre" means a vessel which from the nature of her work is restricted in her ability to manoeuvre as required by these rules and is therefore unable to keep out of the way of another vessel. The following vessels shall be regarded as vessels restricted in their ability to manoeuvre;
 - (i) A vessel engaged in laying, servicing or picking up a navigation mark, submarine cable or pipeline;
 - (ii) A vessel engaged in dredging, surveying or under water operations;
 - (iii) A vessel engaged in towing operation which renders her unable to deviate from her course;
- (k) Vessels shall be deemed to be "in sight of one another" only when one can be observed visually from the other;
- (l) "Vessel" means every description of water craft, including small craft vessel under oars or sail, floating equipment and non-displacement craft.
- (m) "Restricted visibility" means any condition in which visibility is restricted by fog, mist heavy rainstorms, sandstorms or any other similar causes.
- (n) "Rules" means rules of the road.

- (o) Words used but not defined shall have the same meanings respectively assigned to them in the Act.

CHAPTER – II

STEERING AND SAILING RULES

PART- I

Conduct of vessels in any condition of visibility

4. **Application** - Regulations in this Part apply in any condition of visibility.
5. **Look-Out** - Every vessel shall at all times maintain a proper look-out by sight and hearing as well as by all available means appropriate in the prevailing circumstances and conditions so as to make a full appraisal of the situation and of the risk of collision. Vessels shall make use of searchlights to locate luminous marks used for channel marking.
6. **Safe speed** - (1) Every vessel shall at all times proceed at a safe speed so that she can take proper and effective action to avoid collision and grounding, and be stopped within a distance appropriate to the prevailing circumstances and conditions.
- (2) In determining a safe speed the following factors shall be among those taken into account.
- (a) By all vessels
- (i) The state of visibility;
 - (ii) The traffic density including concentrations of fishing vessel or other vessels;
 - (iii) The manoeuvrability of the vessel with special reference to stopping distance and turning ability in the prevailing conditions;
 - (iv) The state of the river, wind, current and the proximity of navigational hazards;
 - (v) State and availability of shore navigational aids and channel marking by day and night;
 - (vi) Speed restrictions imposed by the waterway authority;
 - (vii) The draught of the vessel in relation to available depth of water; and
 - (viii) At nights, the presence of background light such as from the shore lights or from the back scatter of her own lights.
- (b) Additionally, by vessels with operational radar;
- (i) The characteristics, efficiency of the radar equipment;

- (ii) The number, location and movement of vessels detected by radar; and
- (iii) The more exact assessment of the visibility that may be possible when radar is used to determine the range of vessels or objects in the vicinity.

7. **Risk of collision** - (a) Every vessel shall use all available means appropriate to the prevailing circumstance and conditions to determine if risk of collision exists. If there is any doubt, such risk shall be deemed to exist.

(b) In determining if risk of collision exists the following consideration shall be among those taken into account -

- (i) Such risk shall be deemed to exist if a compass bearing of an approaching vessel does not appreciably change and apparent distance from own vessel decreases;
- (ii) Such risk may some times exist even when an appreciable bearing change is evident, particularly when approaching a very large vessel or a tow or when approaching a vessel at close range; and
- (iii) For vessel not fitted with a compass, if the relative position remains unchanged.

8. **Action to avoid collision**:- (a) Any action taken to avoid collision shall, if the circumstances of the case admit be positive, made in ample time and with due regard to the observance of good seamanship.

(b) Any alteration of course or speed to avoid collision shall, if the circumstances of the case admit be large enough to be readily apparent to another vessel. A succession of small alterations of course and / or speed should be avoided.

(c) If there is sufficient room, alteration of course alone may be the most effective action to avoid a close quarters situation provided that it is made in good time, is substantial and does not result in another close quarters situation.

(d) Action taken to avoid collision with another vessel shall be such as to result in passing at a safe distance the effectiveness of the action shall be carefully checked until the other vessel is finally passed and clear.

(e) If necessary to avoid collision or allow more time to assess the situation, a vessel shall slacken her speed or take the way off by stopping or reversing her means of propulsion.

9. **Narrow channels** - (a) A vessel proceeding along the course of a narrow channel shall keep as near to the outer limit of the channel which lies on her starboard side as is safe and practicable. A vessel of less than 10

meters in length or a sailing vessel shall not impede the passage of a vessel which can safely navigate only within the marked channel;

(b) A vessel engaged in fishing shall not impede the passage of any other vessel in the navigable channel;

(c) A vessel shall not cross a navigable channel if such crossing impedes the passage of vessel proceeding upstream or downstream along the navigable channel;

(d) In a narrow channel when over taking can take place only if the vessel to be overtaken has to take action to permit safe passing, the vessel intending to overtake shall indicate her intention by sounding the appropriate signals prescribed in regulation 34 (b). The vessel to be overtaken shall if in agreement, sound appropriate signals prescribed in regulation 34 (b) and take action to permit safe passing. If in doubt she may sound the signal prescribed in regulation 34 (c). This regulation does not relieve the overtaking vessel of her obligation under regulation 13;

(e) A vessel nearing a bend or an area of a narrow channel where other vessels may be obscured by an intervening obstruction shall navigate with particular alertness and caution and shall sound the appropriate signal prescribed in regulation 34 (d); and

(f) Every vessel shall, if the circumstances of the case admit, avoid anchoring in a narrow channel.

10. **Single lane traffic** - When single lane traffic is in force, vessels shall join the lane only when the traffic signal permits to do so. While in the lane, the vessels shall proceed with maximum permissible speed and clear the channel as quickly as possible. Vessels shall not stop or anchor in a traffic lane and shall exercise caution while joining or leaving the single lane to avoid collision with waiting vessels at anchor.

PART- II

Conduct of vessels in sight of one another

11. **Application** - Regulations in this Part shall apply to vessels in sight of one another.
12. **Sailing vessels** - (a) when two sailing vessels are approaching one another so as to involve risk of collision, one of them shall keep out of the way of the other as follows:
- (i) In a non tidal river when one vessel is proceeding upstream and the other vessel proceeding downstream the vessel proceeding upstream shall keep out of the way of the other;

- (ii) When both are proceeding, upstream or downstream and in a tidal lagoon the vessel which is to windward shall keep out of the way of the vessel which is to leeward;
 - (iii) A vessel which is running free shall keep out of the way of a vessel which is close-hauled; and
 - (iv) A vessel which is close-hauled on the port tack shall keep out of the way of a vessel which is close-hauled on the starboard tack.
 - (b) For the purposes of the regulation, "upstream" shall be deemed the direction against current and downstream the direction with the current. "Wind ward" side shall be deemed to be the side opposite to that of which the main sail or the largest fore and aft sail is carried.
13. **Overtaking** - (a) Notwithstanding anything contained in the regulations of this Part any vessel overtaking any other shall keep out of the way of the vessel being overtaken;
- (b) A vessel shall be deemed to be overtaking when coming up with another vessel from a direction more than 22.5 degrees abaft her beam. That is, in such a position with reference to the vessel she is overtaking, that at night she would be able to see only the sternlight / towing light of that vessel but neither of her sidelights.; and
- (c) Any subsequent alteration of bearing between two vessels shall not make the over taking vessel a crossing vessel within the meaning of these rules or relieve her the duty of keeping clear of the overtaken vessel until she is finally passed and clear.
14. **Head-on situation** - When two mechanically propelled vessels are meeting on reciprocal or nearly reciprocal courses so as to involve risk of collision each shall alter her course to starboard so that each shall pass on the port side of the other.
15. **Crossing situation** - When two mechanically propelled vessels are crossing so as to involve risk of collision, the vessel which has the other on her own starboard side shall keep out of the way and shall, if the circumstances of the case admit avoid crossing ahead of the other vessel.
16. **Action by give-way vessel** - Every vessel which is directed by these regulations to keep out of the way of another vessel shall, so far as possible take early and substantial action to keep well clear.
17. **Action by stand-on vessel** - (a) (i) Where by any of these regulations one of two vessels is to keep out of the way, the other shall keep her course and speed. (ii) The later vessel may however take action to avoid collision by her manoeuvre alone, as soon as it becomes apparent to her

that the vessel required to keep out of the way is not taking appropriate action in compliance with these regulations;

(b) When from any cause, the vessel required to keep her course and speed finds herself so close that collision cannot be avoided by the action of the give-way vessel alone, she shall take such action as will best aid to avoid collision;

(c) A vessel which takes action in a crossing situation in accordance with sub paragraph a(ii) of this regulation to avoid collision with another vessel, shall if the circumstances of the case admit, not alter course to port for a vessel on her own port side; and

(d) This regulation does not relieve the give-way vessel of her obligation to keep out of the way.

18. Responsibilities of (between) vessels:-

Except where regulations 9, and 13 otherwise require:-

(a) A mechanically propelled vessel underway shall keep out of the way of:

- (i) A vessel not under command;
- (ii) A vessel restricted in her ability to manoeuvre;
- (iii) A vessel engaged in fishing;
- (iv) A sailing vessel, vessel under oars or country boat; and
- (v) A vessel proceeding down stream by a vessel proceeding upstream, if the prevailing circumstances permit.

(b) A sailing vessel under way shall keep out of the way of:-

- (i) A vessel not under command;
- (ii) A vessel restricted in her ability to manoeuvre; and
- (iii) A vessel engaged in fishing.

(c) A vessel engaged in fishing when underway shall, so far as possible, keep out of the way of:-

- (i) A vessel not under command; and
- (ii) A vessel restricted in her ability to manoeuvre.

PART-III

Conduct of vessels in restricted visibility

- 19. Application** - (a) This regulation applies to vessels not in sight of one another when navigating in or near an area of restricted visibility;

(b) Every vessel shall make appropriate sound signals in accordance with regulation 34 and exhibit lights while navigating in restricted visibility.

(c) Every vessel shall proceed at a safe speed adopted to the prevailing circumstances and conditions of restricted visibility. A mechanically propelled vessel shall have her engines ready for immediate manoeuvre.

(d) Every vessel shall have due regard to the prevailing circumstances and conditions of restricted visibility when complying with the regulation of this Part.

(e) Except where it has been determined that risk of collision does not exist, every vessel which hears apparently forward of her beam the fog signal of another vessel or which cannot avoid a close-quarters situation with another vessel forward of her beam, shall reduce her speed, she shall if necessary take all her way off and in any event navigate with extreme caution until danger of collision is over.

CHAPTER - III

LIGHTS AND SHAPES

20. **Application** - (a) Regulations in this Chapter shall be complied with in all weathers.

(b) The regulations concerning lights shall be complied with from sunset to sunrise, and during such times no other lights shall be exhibited, except such, lights as cannot be mistaken for the lights specified in these rules or do not impair their visibility or distinctive character, or interfere with the keeping of a proper look-out.

(c) The lights prescribed by these regulations shall, if carried, also be exhibited from sunrise to sunset in restricted visibility and may be exhibited in all other circumstances when it is deemed necessary.

(d) The regulations concerning shapes shall be complied with by day.

(e) The lights and shapes unless otherwise specified in these regulations shall comply with the positioning and technical details as per the provisions of Annex-I to International Regulations for prevention of collision at sea (1972).

21. **Definitions** -

(a) "Masthead light" means a white light placed over the fore and aft centerline of the vessel showing an unbroken light over an arc of the horizon of 225 degrees and so fixed as to show the light from right ahead to 22.5 degrees abaft the beam on either side of the vessel. This light shall be placed as far as practicable at height above the hull of not less

than 3 meters for vessels of 20 meters or more in length and 2 meters for vessels of less than 20 meters in length.

(b) "Sidelights" means a green light on the starboard side and a red light on the port side each showing an unbroken light over an arc of the horizon of 112.5 degrees and so fixed as to show the light from right ahead to 22.5 degrees abaft the beam on its respective side. In a vessel of less than 20 meters in length the sidelights may be combined in one lantern carried on the fore and aft centerline of the vessel. Side lights shall be placed not less than 1 meter below the mast head light.

(c) "Stern light" means a white light placed as nearly as practicable at the stern showing an unbroken light over an arc of the horizon of 135 degrees and so fixed as to show the light 67.5 degrees from light aft on each side of the vessel.

(d) "Towing light" means a yellow light having the same characters as the "stern light" defined in paragraph (c) of this regulation.

(e) "All-round light" means a light showing an unbroken light over an arc of the horizon of 360 degrees.

(f) "Flashing light" means a light flashing at regular intervals.

22. **Visibility of lights** - The lights prescribed in these regulations shall be visible at the following minimum ranges:-

(a) A vessel of 20 meters or more in length, mast head light, 3 miles, side light 2 miles stern lights 2 miles, towing light 2 miles, allround light 1 mile.

(b) A vessel less than 20 meters in length, a mast head light 2 miles and side light one mile. Stern light 1 mile, towing light 1 mile, white, red, green or yellow allround light 1 mile.

Lights to be exhibited by vessels

23. **Lights to be exhibited by mechanically propelled vessel under-way** -

(a) A mechanically propelled vessel under-way shall exhibit:

- (i) A mast head light forward.
- (ii) Side lights
- (iii) A stern light.

(b) A mechanically propelled vessel of less than 10 meters in length, in-lieu of the lights prescribed in paragraph (a) may exhibit an allround white light, and shall if practicable also exhibit side lights or a combined lantern.

24. Lights to be exhibited by towing & pushing vessels - (a) A mechanically propelled vessel when towing or pushing shall exhibit:-

(i) Two mast head lights forward in a vertical line when the length of the tow exceeds 200 meters; Three such light in a vertical line. These lights will be in-lieu of light prescribed in regulation 23 (a) (i). The lights shall be placed not less than 1 meter apart and the lowest light placed at a height not less than 2 meters above the hull.

(ii) Side lights.

(iii) A stern light.

(iv) A towing light in a vertical line above the stern light.

(b) When a pushing vessel and a vessel being pushed ahead are connected in a composite unit, they shall be regarded as a mechanically propelled vessel and exhibit the lights prescribed in regulation-23.

(c) A vessel or object being towed shall exhibit:-

(i) Side lights.

(ii) A stern light.

Provided that any number of vessels being towed or pushed in a group shall be lighted as one vessel.

(d) A vessel being pushed ahead, not being part of a composite unit, shall exhibit at the forward end, side lights.

(e) A vessel being towed aside shall exhibit a stern light at the forward end side lights.

(f) Where from any sufficient cause, it is impracticable for vessel or object being towed to exhibit the lights prescribed in this regulation, all possible measures shall be taken to light the vessel or the object towed at least to indicate the presence of unlighted vessel or object.

25. Lights to be exhibited by sailing vessel and vessels under oars - (a) A sailing vessel shall exhibit:

(i) Side lights.

(ii) A stern light.

(b) In a sailing vessel of less than 20 meters in length the lights prescribed in paragraph (a) may be combined in one lantern carried at or near the top of the mast where it can be seen.

(c) A sailing vessel underway may in addition to the lights prescribed in paragraph (a) of this regulation, exhibit at or near the top of the mast, where they can best be seen two allround lights in a vertical line, the upper being red and lower be green.

(d) A sailing vessel less than 10 meters in length, a vessel under oars may exhibit lights prescribed in this regulation, but if she does not, she shall have ready at hand an electric torch or lighted lantern showing a white light which shall be exhibited in sufficient time to prevent collision.

26. **Lights to be exhibited by fishing vessels** - (a) A vessel engaged in fishing shall exhibit:-

(i) Two allround lights in a vertical line the upper being red and the lower white and during day a shape consisting of two cones with their apexes together in a vertical line or a basket.

(ii) When making way through the water in addition to the lights prescribed in (i) side lights, and a stern light.

(b) A vessel less than 10 m in length, a vessel under oars may exhibit a lantern and shall have ready at hand an electric torch which shall be exhibited in sufficient time to prevent collision.

27. **Lights to be exhibited by vessels not under command or restricted in their ability to manoeuvre** - (a) A vessel not under command shall exhibit:

(i) Two allround red lights in a vertical line where they can best be seen by night.

(ii) Two balls or similar shapes in a vertical line by day.

(iii) When making way through the water, side lights and a stern light in addition to the lights prescribed in (i).

(b) A vessel restricted in her ability to manoeuvre shall exhibit:-

(i) Three allround lights in a vertical line, the highest and lowest of these shall be red and the middle light shall be white.

(ii) Three shapes in a vertical line, the highest and lowest shapes shall be balls and the middle one a diamond.

(iii) When making way through the water, mast head lights, side lights and stern light in addition to the lights prescribed in (i).

- (iv) When at anchor, in addition to the lights prescribed in (i) and (ii) above lights and shapes prescribed in regulation 30 for anchored vessels shall also be exhibited.

28. Lights to be exhibited by vessel engaged in dredging - A vessel engaged in dredging, in addition to the lights in 27 (b) shall exhibit:-

Two allround red lights or two balls in a vertical line to indicate the side on which obstruction exists.

29. Lights to be exhibited by pilot vessel - A vessel engaged on pilotage duty shall exhibit:-

- (i) At or near the mast head two allround lights in vertical line the upper white and the lower red.
- (ii) When under way, in addition side lights and stern light.

30. Lights to be exhibited by anchored vessels and vessels aground - (a)

A vessel at an anchor shall exhibit :-

- (i) In the fore part, an allround white light or one ball by day.
- (ii) At or near the stern and at a lower level than the light in (i) an allround white light.

(b) A vessel of less than 20 meters in length may exhibit one allround white light, where it can best be seen.

(c) A vessel aground shall exhibit in addition to the lights prescribed in paragraph (a) or (b), where they can best be seen -

- (i) Two all-round red lights in a vertical line.
- (ii) Three balls in a vertical line by day.

(d) A vessel of less than 10 meters in length shall have ready at hand and electric torch or lighted lantern showing a white light which shall be exhibited in sufficient time to warn the approaching vessels.

31. Lights to be exhibited by hydrofoils & mechanized country craft - Where it is impracticable for a mechanized country craft or a hydrofoil to exhibit lights and shapes of the characteristics or in positions prescribed in the Regulations she shall exhibit lights and shapes as closely similar in characteristics and position as is possible.

CHAPTER – IV

SOUND AND LIGHT SIGNALS

32. Definition - (a) The word "whistle" means any sound signaling appliances capable to producing the prescribed blast.

(b) The term "short blast" means a blast of about one second duration.

(c) The term "prolonged blast" means a blast of about 4 to 6 seconds duration.

(d) The sound signal appliances unless otherwise specified in the regulations shall comply with the technical requirements as per the provisions of Annexure-III of the International Regulations for prevention of collision at sea (1972).

33. **Equipment for sound signals** - A vessel of 20 meters or more in length shall be provided with a whistle and a ball and a vessel of 100 meters or more in length, in addition shall be provided with a gong.

34. **Manoeuvring and warning signals** - (a) Single vessel when vessels are in-sight of one another a mechanically propelled vessel underway, when manoeuvring as authorized or required by these regulations, shall indicate her intentions by the following signals on her whistle

(i) One short blast to mean "I am altering my course to starboard".

(ii) Two short blasts to mean, "I am altering my course to port".

(iii) Three short blast to mean "I am operating stern propulsion".

(b) Overtaking vessels:-

(i) Two prolonged blast followed by one short blasts to mean "I intended to over take you on your starboard side".

(ii) Two prolonged blasts followed by two short blasts to mean "I intended to over take you on your port side"

A vessel being overtaken shall indicate her agreement by the following signals on her whistle; one prolonged, one short, one prolonged, one short blast, in that order, if in doubt she may sound signals prescribed in paragraph (c).

(c) When in doubt - When vessels in sight of one another are approaching each other and from any cause either vessel fails to understand the intentions or actions of the other or is in doubt whether sufficient action is being taken by the other to avoid collision, the vessel in doubt shall immediately indicate such doubt by giving at least 5 short and rapid blasts on the whistle, the signal may be supplemented by a light signal of at least 5 short and rapid flashes.

(d) At bends - A vessel nearing bend or an area of a channel where other vessels may be obscured, shall sound one prolonged blast, such signal shall be answered with a prolonged blast by any approaching vessel.

35. Sound signals in restricted visibility - In or near an area of restricted visibility, where by day or night, signals prescribed in this regulation shall be used as follows:-

(a) A mechanically propelled vessel making way through the water shall sound at intervals of not more than 2 minutes one prolonged blast.

(b) A mechanically propelled vessel underway but stopped and making no way through the water shall sound at intervals of not more than 2 minutes. Two prolonged blasts in succession with an interval of about 2 seconds between them.

(c) A vessel not under command, a vessel restricted in her ability to manoeuvre, a vessel constrained by her draught, vessel engaged in towing, fishing or pushing another vessel, shall at intervals of not more than 2 minutes three blasts in succession namely one prolonged followed by two short blasts.

(d) A vessel at anchor shall at intervals of not more than one minute ring the bell rapidly for about 5 seconds. A vessel at anchor may in addition sound three blasts in succession namely one short one prolonged and one short blast to give warning on her position, and possibility of collision to any approaching vessel. A vessel aground shall give three separate and distinct strokes on the bell immediately before and after the rapid ringing of the bell.

(e) A vessel of less than 10 meters in length shall not be obliged to give the above mentioned signals but shall make some other effective sound signal at intervals of not more than 2 minutes.

36. Distress signals - When a vessel is in distress and requires assistance from other vessels or from shore, the following shall be the signals to be used or displayed by her either together or separately.

- (a) A continuous sounding of any sound signal apparatus.
- (b) A flag or a light waved in a circle to draw attention.
- (c) Flares on the deck.
- (d) "May day" transmitted by radio telephony.
- (e) International code of signal N.C. hoisted on the vessel.

CHAPTER – V**EXEMPTIONS**

37. Any vessel (or class of vessel) provided that she complies with the requirement of the Inland Vessels Act, 1917, the keel of which is at corresponding stage of construction before the entry into force of these regulations may be exempted from compliance therewith of the following provisions until 2 years after the date of entry into force of these regulations.
- (a) The installation of lights with colour specifications and intensity as prescribed in regulation 20 (e).
 - (b) Repositioning of masthead lights and side lights on vessels resulting from prescriptions of regulations 21.
 - (c) The installation of lights with ranges prescribed in regulation 22.

38. **Exemption**

Exemption "in vessels or class of vessels provided that she complies with the requirement of the Inland Vessels Act, 1917, the keel of which is at corresponding stage of construction before the entry into force of these regulations may be exempted from compliance therewith of the provision for carriage of life boats until two years after the date of entry into force of these regulations provided that adequate life raft in lieu are provided on board.

- (a) Fishing boats;
- (b) Cargo vessels

CHAPTER – VI**SUSPENSION, CANCELLATION AND APPEAL**

39. **Power to suspend and cancel endorsement on certificate of survey -**

(1) The Competent Officer reserves the right to suspend forthwith the endorsement on certificate of survey of the vessel for a period not exceeding fifteen days in the case of contravention of any of the regulation mentioned herein before at first instance.

(2) In the case of repeated contravention the Competent Officer shall have the power to cancel the endorsement on certificate of survey of the vessel forthwith.

40. **Appeals** - (1) Any person aggrieved by an order of the Competent Officer issued under regulation 3, may within ten days from the date on which he receives such order, appeal against it to the officer so designated.

(2) The officer so designated shall cause notice of every such appeal to be given to the Competent Officer in such manner, as may be prescribed and after giving an opportunity to the Competent Officer and to the appellant to be heard, shall pass such order thereon as seems fit and his decision shall be final.

CHAPTER - VII

PENALTIES AND LEGAL PROCEEDINGS

41. **Penalty for contravening regulations of the Road for National Waterways** - If any person contravenes any of the regulations of the Road as mentioned hereinbefore, he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees for each contravention.
42. **Application of the provisions of Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917)** - Notwithstanding anything mentioned above, the provisions of Chapter VII of the Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917) shall also apply mutatis mutandis, to the mechanically propelled vessels making voyage on National Waterways as they apply to mechanically propelled vessels on any inland water.

S. S. PANDIAN, Secy.

[ADVT. III/IV/306/04-Exty.]

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 नवम्बर, 2004

भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण, भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अधिनियम, 1985 (1985 का 82) की धारा 35 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केंद्रीय सरकार के पूर्वानुमोदन से, राष्ट्रीय जलमार्ग पर नौपरिवहन और पोत परिवहन की सुरक्षा को सनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित विनियम बनाता है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ-

1. इन नियमों का संक्षिप्त नाम राष्ट्रीय जलमार्ग, नौपरिवहन और पोत परिवहन की सुरक्षा विनियम, 2002 है
2. ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे ।
3. इन विनियमों का विस्तार सभी राष्ट्रीय जलमार्गों पर है ।

2. परिभाषाएं

इन विनियमों में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,-

- (क) "अधिनियम" से भारतीय अंतर्देशीय जलमार्ग प्राधिकरण अधिनियम, 1985(1985 का 82) अभिप्रेत है;
- (ख) "उपाबंध" से इन विनियमों का उपाबंध अभिप्रेत है;
- (ग) "सक्षम अधिकारी" से प्राधिकरण द्वारा उस रूप में नियुक्त किया गया कोई ऐसा अधिकारी अभिप्रेत है जो विकास, प्रबंध और अनुरक्षण के लिए किसी राष्ट्रीय जलमार्ग के सैक्शन का भारसाधक हो ;
- (घ) "जलसरणी चिन्ह" के अन्तर्गत बांस चिन्ह, बोया और बीकन भी हैं,
- (ङ) "कनवाय" से जलयान, प्लवमान उपस्कर या बेड़ा जो यंत्र नोदित जलयान द्वारा अनुकर्षित किया जाता है या धकेला जाता है, का समूह अभिप्रेत है ;
- (च) "अपवाही" से इंजन को बंद करके तरंग द्वारा चालन किया जाना अभिप्रेत है ;
- (छ) "पार नौका" से कोई ऐसा जलयान अभिप्रेत है जो जलमार्ग के उस पार या साथ-साथ परिवहन सेवाएं उपलब्ध कराता है ;
- (ज) "अन्तर्देशीय यंत्र नोदित जलयान" से ऐसा कोई यंत्र नोदित जलयान अभिप्रेत है जो किसी अन्तर्देशीय जल पर सामान्यतः चलाया जाता है ;
- (झ) "जलपाश" से नदी या नहर का ऐसा परिरोधित सैक्शन अभिप्रेत है जहां निकटवर्ती सैक्शन के बीच जल द्वार और जल कपाट का प्रयोग करके नावों को चलाने और धीमा करने के लिए स्तर में परिवर्तन किया जा सके ;
- (ञ) "जलपाश बेसिन" से उस जलपाश तक से पहुंच अभिप्रेत है जो जलपाश की ओर उर्ध्व प्रवाह और अनुप्रवाह से संकीर्ण होता जाता है ;

- (ट) “मास्टर” से कोई ऐसा व्यक्ति अभिप्रेत है जो पाइलट, बन्दरगाह मास्टर, बर्थिंग मास्टर नहीं है, तत्समय किसी जलयान की कमान करता या भारसाधन करता है ;
- (ठ) “यंत्र नोदित जलयान” से विद्युत, भाप या अन्य यांत्रिक शक्ति द्वारा पूर्णतः या भागतः नोदित प्रत्येक वर्णन का यान अभिप्रेत है ;
- (ड) “नाव्य जलसरणी” से पोतों के गुजरने के लिए आशयित जल सरणी अभिप्रेत है ;
- (ढ) “स्वामी” से जब उसका उपयोग माल के संबंध में किया जाए, जिसके अन्तर्गत उसकी सुरक्षित अभिरक्षा के लिए परेषक, परेषिती, माल भेजने वाला या अभिकर्ता भी है और जब उसका उपयोग किसी जलयान के संबंध में किया जाए, इसके अन्तर्गत कोई भागतः स्वामी, चार्टर परेषिती, बंधकदार या उसका भारसाधक अभिकर्ता भी है, अभिप्रेत है ;
- (ण) “पत्तन” से कोई अन्तर्देशीय पत्तन अभिप्रेत है ;
- (त) “लघु यान” से कोई ऐसा यान अभिप्रेत है जिसकी आवरण लम्बाई 10 मीटर से कम और चौड़ाई 3 मीटर से कम है ;
- (थ) “सैक्शन” से एक क्षेत्र मुख्यालय द्वारा नियंत्रित जलमार्ग का कोई भाग अभिप्रेत है ;
- (द) “टर्मिनल” से ऐसा स्थान जहां परिवहन की एक रीति से दूसरी रीति तक स्थौरा और सवारियां अदला बदली करते हैं, अभिप्रेत हैं , टर्मिनल प्रसुविधाओं के अन्तर्गत बर्थिंग, स्थौरा अन्तरण, भण्डारण और टिकटघर और सवारी विश्राम और आराम कक्ष सम्मिलित हैं, और
- (ध) “जलयान” से प्रत्येक वर्णन का जलयान अभिप्रेत है, जिसके अन्तर्गत लघु यान चप्पू या नाव के अधीन जलयान, प्लवमान उपस्कर और अविस्थापित यान भी हैं ।

अध्याय 1

जलमार्ग और जलमार्गों पर सुरक्षोपाय

3. नाव्य जलसरणी का चिन्हांकन — कोई नाव्य जलसरणी, जलसरणी की सुरक्षित सीमाएं उपदर्शित करने के लिए बांस, बोया जैसे जलसरणी चिन्ह द्वारा चिन्हित की जा सकेगी। जलसरणी चिन्हांकन के व्यौरे उपाबंध 1 में दिए गए हैं। उस दशा में जहां रात्रि नौपरिवहन चिन्ह है, वहां उसकी प्रकाश या प्रदीप्त पेंट द्वारा व्यवस्था की जाएगी।

4. यातायात संकेत और चिन्ह नाव्य जलसरणी पर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए यातायात संकेत या चिन्ह नदी के किनारों या नदी के किन्हीं जुड़नारों पर निर्मित किए जाएंगे। संकेत चिन्ह चमकीले प्रदीप्त पेन्ट द्वारा पेन्ट किए जाएंगे। उपाबंध — II में विभिन्न संकेत और चिन्ह दिए गए हैं।

5. पुलों से होकर गुजरना — जहां कोई जलयान किसी पुल के नीचे से गुजर रहा है वहां मस्तूल या संकोच्य मस्तूल की ऊंचाई और चक्रग्रह अधिरचना की ऊंचाई जलमार्ग स्तर और सड़क पुल की ऊंचाई के बीच की ऊंचाई से कम होनी चाहिए।

ऐसे जलयान की गति विद्यमान मौसम की दशाओं और अनुभव की जाने वाली संभाव्य तरंगों के प्रति निर्देश से विनियमित की जानी चाहिए।

6. जलपाश से गुजरना

(1) जब जलपाश और जलपाश बेसिन से होकर नौपरिवहन किया जा रहा हो तब मास्टर-पोत के सुरक्षा और व्यवस्थित चालन तथा जलपाश से होकर शीघ्र गुजरना सुनिश्चित करने के लिए जलपाश मास्टर द्वारा उसे दिए गए किन्हीं आदेशों का पालन करेगा।

(2) जलपाश से होकर गुजरने के लिए पूर्विकता का क्रम निम्नानुसार होगा—

- (क) प्राधिकरण के जलयान, सरकारी जलयान, सैनिक और पुलिस के जलयान,
- (ख) यात्री यान,

- (ग) मछली पकड़ने की नावें,
 - (घ) स्थोरा जलयान
 - (ङ) अन्य यान ;
- (3) मास्टर, जलपाश से होकर नौपरिवहन करते समय निम्नलिखित पूर्वावधानियां बरतेगा —
- (क) जलपाश बेसिन की ओर पहुंचने वाले जलयान की गति कम कर दी जाएगी और सावधानीपूर्वक नौपरिवहन किया जाएगा । जलपाश बेसिन के निकट ओवरटेक करना तब तक प्रतिषिद्ध है जब तक कि जलपाश मास्टर द्वारा ऐसा करने के लिए अनुदेश न दिए गए हों ,
 - (ख) जलपाश या जलपाश बेसिन में जलयान को लंगर नहीं लगाया जाएगा या केबिल या जंजीरें नहीं लगाई जाएंगी,
 - (ग) जब जलपाश को भरा जा रहा है या रिक्त किया जा रहा है, जलयान को मूर किया जाएगा और मूरिंग इस प्रकार की जाएगी कि दीवारों या द्वारों के सामने उच्छलन को रोका जा सके,
 - (घ) जलयानों में जलपाश संरचना को नुकसान से बचाने के लिए पर्याप्त इंजनछाज की व्यवस्था की जाएगी ,
 - (ङ) पाल के अधीन जलयान जलपाश में प्रवेश करने से पूर्व अपना पाल नीचे कर देगा ।
- (4) जलपाश से होकर गुजरना जलपाश बेसिन में जलयान के आगमन क्रम में होगा ।
- (5) धारा 6(2) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, किसी जलयान को प्राधिकरण द्वारा गुजरने की स्पष्टतः अनुमत की गई पूर्विकता जलपाश लगाने या जलपाश को हटाने की पूर्विकता होगी ।

7. कतिपय परिस्थितियों में गति का कम किया जाना —

- (1) प्रत्येक जलयान ऐसे अत्यधिक धोवन या चूषण सृजित करने से बचने के लिए जिससे खड़े हुए या गतिमान जलयानों या संरचनाओं को नुकसान होने की संभावना है, अपनी गति विनियमित करेगा ।
- (2) विशिष्टतः जलयान उचित समय पर किन्तु सुरक्षा के लिए अपेक्षित स्टीयरिंग मार्ग को छोड़े बिना गति कम कर देगा —
 - (क) पत्तन प्रवेशों से बाहर,
 - (ख) किनारे पर बंधे जलयान के निकट या उतरते समय लदाई के प्रक्रम पर या स्थोरा उतारते समय,
 - (ग) जलयानों के निकट जब वे सामान्य रोक स्थानों पर खड़े हों ।

8. राष्ट्रीय जलमार्ग पर जलयान का अपवाही होना — राष्ट्रीय जलमार्ग पर किसी जलयान का अपवाही होना तब तक प्रतिषिद्ध होगा जब तक कि सक्षम अधिकारी द्वारा प्राधिकृत न कर दिया हो ।

9. फैरी जलयानों द्वारा नाव्य जलसरणी को पार करना — नाव्य जलसरणी को पार करते समय, फैरी जलयान नाव्य जलसरणी के साथ-साथ चल रहे जलयान या बेड़े से इतनी दूरी पर रहेगा कि बेड़े अपने दिशाकोण बदलने या गति कम के लिए बाध्य नहीं है :

परन्तु विशेष परिस्थितियों में फैरी जलयान को सक्षम अधिकारी द्वारा नाव्य जलसरणी को पार किए जाने की पूर्विकता प्रदान की जा सकेगी और ऐसे जलयान पर रात्रि में चतुर्दकी हुई हरी बत्ती और दिन में हरा ध्वज संप्रदर्शित किए जाएंगे और उन्हें अनुगमन का उतना अधिकार होगा, जितना परिस्थितियां अनुज्ञात करें ।

10. नौपरिवहन और मौसम विज्ञान संबंधी जानकारी — सक्षम अधिकारी, तूफान, आकस्मिक बाढ़, जल सरणी की गहराई और नौपरिवहन में खतरों के संबंध में नदी सूचनाएँ जारी करके, नद्य चार्ट प्रकाशित करेगा और उपाबंध 3 में दिए गए समुचित सावधानी संकेतों को संप्रदर्शित करके नदी पत्तनों पर जानकारी प्रसारित करने की व्यवस्था करेगा ।

अध्याय 2

जलयानों की सुरक्षा

11. सर्वेक्षण का और रजिस्ट्रीकरण प्रमाणन — वाणिज्य पोत परिवहन अधिनियम, 1958, तटीय जलयान अधिनियम, 1938 कैनाल और पब्लिक फैरीज अधिनियम, 1890 (1890 का मद्रास अधिनियम 2) और अन्तर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 के अधीन यंत्रनोदित जलयान की बाबत जारी किया गया प्रत्येक रजिस्ट्रीकरण का प्रमाणपत्र और सर्वेक्षण का प्रमाणपत्र राष्ट्रीय जलमार्ग में जलयात्रा करने के लिए, यथास्थिति, रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र या सर्वेक्षण प्रमाणपत्र के रूप में विधिमान्य और प्रभावी होगा :

परन्तु सर्वेक्षण का प्रमाणपत्र विनियमों के अनुसार सुरक्षा अपेक्षाओं का ध्यान रखते हुए सक्षम अधिकारी द्वारा समुचित रूप से पृष्ठांकित किया जाएगा।

12. सक्षमता प्रमाणपत्र — वाणिज्यिक पोत परिवहन अधिनियम, 1958 और अन्तर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 के अधीन मास्टर, सेरंग, इंजीनियर और इंजन ड्राइवर के रूप में जारी किया गया सक्षमता प्रमाणपत्र या सेवा प्रमाणपत्र राष्ट्रीय जलमार्ग में जलयात्रा करने के लिए विधिमान्य होगा।

13. जलयान पर पहचान चिन्ह —

- (1) किसी लघु यान के सिवाय प्रत्येक जलयान पर उसके पोत के लिए हल पर निम्नलिखित चिन्ह होगा —

(क) जलयान का नाम (जलयान के प्रत्येक अग्रभाग और पिछ्छ भाग पर नाम उत्कीर्णित होगा)

(ख) रजिस्ट्रीकरण सं०

(ग) रजिस्ट्री का स्थान और रजिस्ट्रीकरण का वर्ष,

- (2) पहचान चिन्ह 20 सेंटीमीटर से अन्यून ऊंचाई के और 2 सेंटीमीटर चौड़ाई के अक्षरों में उत्कीर्णित होगा और गहरी पृष्ठभूमि पर हल्के रंग में या गहरे रंग में पेंट किया हुआ होगा।

- (3) पहचान चिन्ह के अतिरिक्त प्रत्येक जलयान पर स्थिर फलक पर निम्नलिखित जानकारी दर्शित की जाएगी और ऊपरी डैक पर प्रदर्शित होगी —

(क) सकल रजिस्ट्रीकृत टन,

(ख) सवारियों की अधिकतम अनुज्ञेय संख्या,

(ग) स्वामी का नाम,

(घ) अन्तिम सर्वेक्षण की तारीख

- (4) प्रत्येक जलयान के बीच से कम से कम एक-एक मीटर दोनों ओर भार रेखा चिह्नित की जाएगी और जलयान के दोनों छोरों पर मीटरों और डेसीमीटरों में डुबाव मापमान चिह्नित किया होगा।

- (5) प्रत्येक लघु यान पर उसका रजिस्ट्रीकरण संख्यांक और स्वामी का नाम जलयान के दोनों छोरों पर अंकित होगा,

(6) प्रत्येक यान पर यान के किसी सहजदृश्य भाग पर चौड़े फलक पर उसका रजिस्ट्रीकरण संख्यांक या स्वामी का नाम या दोनों प्रदर्शित किए जाएंगे ।

14. राष्ट्रीय जलमार्ग पर संचलन के लिए कतिपय शर्तों सहित जलयान को चलाना — राष्ट्रीय जलमार्ग में जलयात्रा करने वाला जलयान —

- (क) यह सुनिश्चित करेगा कि जलयान की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई, दबाव और गति, कन्वाय और पास पास विरचनाएं उपयुक्त हैं और समय-समय पर सक्षम अधिकारी द्वारा यथविनिर्दिष्ट सीमाओं के अनुसार हैं,
- (ख) यह सुनिश्चित करेगा कि जलयान या (बेड़े) के किनारों के बाहर कोई वस्तु प्रदर्शित करने के लिए अनुज्ञात नहीं की गई है जो अन्य जलयानों, बेड़ों, प्लवन स्थापनों या जलमार्ग अथवा जलसरणी पर या इसके सन्निकट संस्थापनों को कोई नुकसान पहुंचाती हों, सिवाय उनके जो (ग) में विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन हैं,
- (ग) यह सुनिश्चित करेगा कि प्रत्येक मामले में सक्षम अधिकारी द्वारा यथा विनिर्दिष्ट ऊपर विमीय स्थोरा के अभिवहन के लिए सुरक्षा अपेक्षाओं का कड़ाई से पालन किया गया है ।

15. पत्तन क्षेत्र में जलयानों की मूरिंग करने या लंगर डालने से संबंधित शर्तें — कोई जलयान पत्तन के भीतर उन क्षेत्रों के सिवाय जो सक्षम अधिकारी द्वारा ऐसे प्रयोजनों के लिए अभिहित किए गए हैं, किसी जलयान को मूर नहीं किया जाएगा या लंगर नहीं लगाया जाएगा ।

16. जलयान — स्थिर जलयानों, बेड़ों और प्लवमान उपस्करों के लंगर डाले जाएं या उन्हें ऐसी रीति से सुरक्षित रूप में बांधा जाए कि वे धाराओं को सह सकें और उन्हें जलस्तर में परिवर्तन होने पर समायोजित किया जा सके ।

17. पाइलट कार्य — (1) सक्षम अधिकारी —

- (क) नदी के ऐसे विस्तार को वहां वर्गीकृत करेगा जहां पाइलट कार्य अनिवार्य हो और जहां पाइलट कार्य वैकल्पिक हो,
- (ख) अनुभवी पाइलटों की तैनाती की व्यवस्था करेगा, और
- (ग) उन क्षेत्रों में जहां पाइलट कार्य घोषित किए गए हों वहां जलयानों को पाइलेट की सेवाएं उपलब्ध कराएगा ।

अध्याय 3**नौपरिवहन सुरक्षा और मास्टर और स्वामी का दायित्व**

18. **मास्टर के लिए अनुदेश** — (1) मास्टर यह सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी होगा कि जलयान नदी के लिए उपयुक्त है । वह विशिष्टितया नौपरिवहन के लिए सुरक्षोपायों से संबंधित विनियमों का अनुसरण करेगा —
- (क) राष्ट्रीय जलमार्ग में जलयान, संस्थापनों के संबंध में अपेक्षित सतर्कता बरतने और नुकसान से बचने और पोत परिवहन और नौपरिवहन में बाधा कारित करने से बचने के लिए सभी पूर्वावधानियां बरतेगा,
 - (ख) आसन्न खतरे से बचना, स्थिति द्वारा अपेक्षित सभी उपाय करना (नाविक कला की साधारण परिपाटी के अनुसार) चाहे इसके लिए इन विनियमों से विचलित क्यों न होना पड़े ।
 - (ग) जब उसका जलयान अन्य जलयानों के अनुकर्षण में लगा हो, तब उसके जलयान और उसके कर्मीदल और अनुकर्षण में जलयानों को लागू नियमों या विनियमों के अनुपालन के लिए उत्तरदायी होना,
 - (घ) जलयान के रजिस्ट्रीकरण और सर्वेक्षण के विधिमान्य प्रमाणपत्रों और कर्मीदल द्वारा विधिमान्य प्रमाणपत्र या अनुज्ञप्ति, पोत की नियमावली या कर्मीदल सूची, पोतों की लॉग और इंजन का लागू का रखा जाना सुनिश्चित करना,
 - (ङ) यह सुनिश्चित करना कि किसी भी समय जलयान पर अधिक भार नहीं है या उतने से अधिक सवारियों की संख्या अभिवहन नहीं कर रहा है, जितनी संख्या के लिए अभिवहन के लिए प्रमाणित किया जाए ।
 - (च) यह सुनिश्चित करना कि खतरनाक माल या विस्फोटक सामग्री फलक पर सक्षम प्राधिकारी द्वारा प्राधिकृत रूप में ले जाई जा रही है, और ऐसे माल या सामग्री को फलक पर अभिवहन के लिए विस्फोटक पदार्थ नियम, 1983 के अनुसार प्रक्रिया और पूर्वावधानियां बरती जा रही हैं ,
 - (छ) ऐसे किसी जलयान या बेड़े को देखकर जो दुर्घटनाग्रस्त हो गया है, जिससे व्यक्तियों या जलयान को खतरा या जलसरणी में बाधित होने

का संकट उत्पन्न हो गया है, ऐसे जलयानों को अपने जलयान की अपनी सुरक्षा को खतरे में डाले बिना तुरन्त सहायता प्रदान करना,

- (ज) किसी सामुद्रिक दुर्घटना की दशा में पहुंचने वाले जलयानों को जब उनको डूबने का खतरा हो या नियंत्रण से परे हो तो उन्हें उचित समय में आवश्यक कार्रवाई करने और जलसरणी से दूर रहने में समर्थ बनाने के लिए उनको चेतावनी देना ।
- (झ) सुनिश्चित करें कि उपाबंध IV में यथाविनिर्दिष्ट जीवन रक्षक साधित्र अच्छी स्थिति में और तुरन्त उपयोग के लिए उपलब्ध स्थिति फलक पर ले जाए जाते हैं ।
- (ञ) सुनिश्चित करें कि किसी भी समय जलयान जलमार्ग में उन स्थानों के सिवाय जो सक्षम अधिकारी द्वारा अभिहित किए जाएं, कच्चा मल, तैलीय पदार्थ, कूड़ा करकट आदि नहीं बहाएगा ।
- (2) सवारी जलयान का मास्टर फलक पर ले जाए गए जीवन रक्षक साधित्रों के व्ययन और उसके उपयोग को संप्रदर्शित करेगा और यात्रा आरम्भ करने से पूर्व जीवन रक्षक जैकिटों के उपयोग का प्रदर्शन करेगा ।
- (3) मास्टर यह सुनिश्चित करेगा कि सभी नौपरिवहनीय सहायताएं, अग्निशामक सामग्री और बाढ़ नियंत्रण साधित्र फलक पर समुचित कार्यकरण की दशा में हैं और तुरन्त उपयोग किए जाने की स्थिति में उपलब्ध हैं और ऐसे साधित्रों के दक्ष उपयोग के लिए अपने कर्मीदल से नियमित अभ्यास कराएगा ।
- (4) मास्टर निकटतम सक्षम प्राधिकारी को निम्नलिखित के संबंध में तुरन्त रिपोर्ट करेगा —
 - (i) किसी अन्य जलयान को आपदा में देखने,
 - (ii) जलयान के स्थल पर आने या डूबने,
 - (iii) उसके जलयान में आग लगने या आप्लावन हो,
 - (iv) किन्हीं जलमार्ग संस्थापनों या स्थायी संरचनाओं को नुकसान पहुंचाने,
 - (v) अनियत बाधा का संप्रेक्षण करने या नौपरिवहनीय सहायता के न होने की जानकारी होने,
 - (vi) फलक पर किसी ऐसी वस्तु के गिरने, जा नौपरिवहन के लिए बाधा या खतरा हो सकेगी,

- (vii) राजकीय जलमार्ग में तेल का बिखराव होने,
- (viii) फलक पर जलदस्युता या चोरी होने ।

- (5) किसी जलयान का मास्टर या भारसाधक व्यक्ति सक्षम अधिकारी या उसके द्वारा प्राधिकृत किसी व्यक्ति को इन विनियमों के अनुपालन का सत्यापन करने के लिए सभी आवश्यक सुविधाएं देगा ।

(19) स्वामी के लिए अनुदेश — जलयान का स्वामी यह सुनिश्चित करेगा कि जलयान सभी बाबत नद्य योग्य है और उस पर सक्षम कर्मीदल है ।

(2) स्वामी —

- (क) यह सुनिश्चित करेगा कि जलयान को तब तक जलयात्रा में अग्रसरित नहीं किया जाएगा या किसी सेवा के लिए उपयोग में नहीं लाया जाएगा जब तक कि जलयान के पास ऐसी जलयात्रा या सेवा के लिए लागू विधिमान्य सर्वेक्षण प्रमाणपत्र न हो,
- (ख) यह सुनिश्चित करेगा कि केवल ऐसे अर्हित कार्मिकों को जिनके पास सेवा प्रमाणपत्र या अनुज्ञप्ति का सक्षमता का कोई विधिमान्य प्रमाणपत्र है, जलयान के फलक पर मास्टर/सेरंग, इंजीनियर, चालक और कर्मीदल के रूप में नियोजित किया गया है,
- (ग) यह सुनिश्चित करेगा कि उपलब्ध कराया गया कर्मीदल पर्याप्त रूप से विशाल और कुशल है जिससे पर्याप्त रूप से यह सुनिश्चित करने के लिए उन फलक पर उनकी सुरक्षा और सुरक्षित नौपरिवहन सुनिश्चित किया जाएगा,
- (घ) तृतीय पक्षकार की जोखिम के विरुद्ध अपने जलयान को बीमा उपलब्ध कराएगा,
- (ङ) किसी सहजदृश्य स्थान पर सुमेदक चिन्ह (रजिस्ट्रीकरण चिन्ह) संप्रदर्शित करने की व्यवस्था करना,
- (च) यह सुनिश्चित करेगा कि किसी यान की बाबत अनुदत्त किया गया रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र उस जलयान के केवल विधिपूर्ण नौपरिवहन के लिए उपयोग में लाया जाएगा,
- (छ) अपने यान में किए गए परिवर्तनों की रिपोर्ट करेगा जो जलयान से संबंधित ऐसी विशिष्टियों के या रजिस्ट्रीकरण प्राधिकरण के पास रजिस्ट्रीकरण प्रमाणपत्र में दर्ज किए गए विवरण के अनुरूप नहीं हैं,

- (ज) यदि यह परित्यक्त जलयान है, नौपरिवहन जलसरणी में अन्य जलयानों को खतरे से बचाने के लिए जलयान के तुरन्त चिन्हांकन की व्यवस्था की जाए,
- (झ) यथाशक्य शीघ्र या सक्षम अधिकारी द्वारा जैसा निदेश दिया जाए, नौपरिवहन जलसरणी से जलयान को हटाने के लिए व्यवस्था करेगा,
- (ञ) तुरन्त निकटतम सक्षम अधिकारी को सूचना देगा, जब कभी
- (i) कोई जलयान क्षतिग्रस्त परित्यक्त किया गया है या तात्त्विक रूप से नुकसानग्रस्त हुआ है,
- (ii) किसी जलयान के या फलक प इसके किसी दुर्घटना होने, जिसके अन्तर्गत किसी अन्य जलयान या संरचनाओं पर जीवन हानि या तात्त्विक नुकसान भी सम्मिलित है,
- (iii) किसी जलयान से राष्ट्रीय जलमार्ग में तेल का बिखराव हुआ है।
3. यदि कोई स्वामी उप विनियम (2) के खण्ड (ज) के अधीन किसी जलयान को हटाने में असफल रहता है, सक्षम अधिकारी ऐसे जलयान को हटवाएगा और स्वामी से ऐसे हटाए जाने की लागत वसूल करेगा।

अध्याय 4

निलम्बन, रद्दकरण और अपील

20. सर्वेक्षण प्रमाणपत्र पर पृष्ठांकनको निलम्बित और रद्द करने की शक्तियां —

- (1) सक्षम अधिकारी को जलयान के सर्वेक्षण प्रमाणपत्र पर तुरन्त प्रथम दृष्टि में इसमें दर्शित विनियमों में से किसी के उल्लंघन करने की दशा में, छह दिवस की अनधिक की अवधि के लिए निलम्बित करने का अधिकार है।
- (2) निरन्तर उल्लंघन की दशा में सक्षम अधिकारी को जलयान के सर्वेक्षण प्रमाणपत्र के पृष्ठांकन को तुरन्त रद्द करने की शक्ति होगी।

21. अपील — (1) कोई व्यक्ति जो सक्षम अधिकारी के विनियम 20 के अधीन जारी किए गए किसी आदेश से व्यथित है, उस तारीख से जिसको वह ऐसा आदेश प्राप्त करता है, तीस दिन के भीतर उसके विरुद्ध इस प्रकार अभिहित अधिकारी को अपील कर सकेगा।

2. इस प्रकार अभिहित अधिकारी ऐसी प्रत्येक अपील की सूचना सक्षम अधिकारी को ऐसी रीति में जो विहित की जाए, दिलवाएगा और अपीलार्थी को सुनवाई का अवसर दिए जाने के पश्चात उस पर ऐसे आदेश पारित करेगा जो वह ठीक समझे और उसका विनिश्चय अन्तिम होगा।

अध्याय 5

शास्तियां और विधिक कार्यवाहियाँ

22. नाव्य जलसरणी का अनुपालन करने में असफल रहने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर विनियम 3 के उल्लंघन में नाव्य जलसरणी चिन्ह का अनुपालन करने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से जो चार सौ रूपए तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
23. यातायात संकेत और चिन्ह का अनुपालन करने में असफल रहने पर शास्ति — यदि जलयान का मास्टर विनियम 4 के उल्लंघन में किसी यातायात चिन्ह या संकेत का अनुपालन करने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो दो सौ पचास रूपए तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
24. शिरोपरि निकासी का अनुपालन करने में असफल रहने पर शास्ति — यदि जलयान का मास्टर विनियम 5 के उल्लंघन में अपने जलयान के शिरोपरि निकासी को सुनिश्चित करने में असफल रहता है या पुल से गुजरते समय गति को विनियमित करने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो पांच सौ रूपए तक का हो सकेगा दण्डनीय होगा ।
25. जलपाश मास्टर के इस आदेश के अननुपालन के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर जलयान की सुरक्षा तथा व्यवस्थित संचालन सुनिश्चित करने में जलपाश मास्टर द्वारा उसे दिए गए किसी आदेश का अनुपालन करने में और विनियम 6 (1) तथा (2) के उल्लंघन में जलपाश से होकर शीघ्र गुजरने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से जो पांच सौ रूपए तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
26. जलपाश के माध्यम से बातचीत करते समय पूर्वावधानी बरतने में असफलता के लिए शास्ति — यदि मास्टर विनियम 6(3) के उल्लंघन में जलपाश से गुजरते समय कोई पूर्वावधानी बरतने में असफल रहता है, वह ऐसे जुर्माने से, जो तीन सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
27. अत्यधिक धोवन या चूषण के सृजित होने से बचने के लिए गति विनियमित करने में असफलता के लिए शास्ति — जब जलयान का मास्टर ऐसे अत्यधिक धोवन या चूषण के सृजन से बचने के लिए जिससे विनियम 7 के उल्लंघन में जिससे स्थैतिक या गतिमान जलयान या संरचना को नुकसान होने ही संभावना है, जलयान की गति को विनियमित करने में असफल रहता है, तो वह ऐसे जुर्माने से, जो दो सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।

28. जलयान को अपवाही कारित करने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर जो सक्षम अधिकारी द्वारा प्राधिकृत नहीं है, विनियम 8 के उल्लंघन में अपने जलयान को अपवाही करता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो एक सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
29. सुरक्षित दूरी बनाए रखने में असफल रहने पर शास्ति — जब फैंरी जलयान का मास्टर नाव्य जलसरणी को पार करते समय नाव्य जलसरणी के साथ-साथ जलयानों या बेड़ों से ऐसी दूरी बनाए रखने में असफल रहता है, तब विनियम 9 के उल्लंघन में बाद वाला जलयान या बेड़ों को अपना पथ बदलने के लिए बाध्य होना पड़ता है या गति कम करनी पड़ती है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
30. परिवहन संबंधी और मौसम संबंधी सूचना का अनुपालन करने में असफल रहने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर विनियम 10 के उल्लंघन में सक्षम अधिकारी द्वारा जारी किए गए नद्य सूचनाओं या नद्य चार्टों या सावधानी संकेतों का अनुपालन करने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो दो सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
31. राष्ट्रीय जलमार्ग में जलयात्रा के लिए सर्वेक्षण प्रमाणपत्र पर पृष्ठांकन अभिप्राप्त करने में असफलता के लिए शास्ति — यदि कोई जलयान राष्ट्रीय जलमार्ग में विनियम 11 के उल्लंघन में सर्वेक्षण प्रमाणपत्र पर पृष्ठांकन अभिप्राप्त किए बिना अग्रसरित होता है तो स्वामी और मास्टर प्रत्येक ऐसे जुर्माने से, जो पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
32. राष्ट्रीय जलमार्ग पर जलयात्रा करने के लिए सक्षमता प्रमाणपत्र रखने में असफल रहने पर शास्ति — यदि जलयान राष्ट्रीय जलमार्ग में किसी जलयात्रा पर विनियम 12 के उल्लंघन में किसी सक्षमता प्रमाणपत्र के बिना अग्रसरित होता है तो मास्टर, सेरंग, इंजीनियर और इंजन चालक प्रत्येक ऐसे जुर्माने से, जो पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
33. जलयान पर पहचान चिन्ह धारित करने में असफलता के लिए शास्ति — यदि कोई जलयान किसी राष्ट्रीय जलमार्ग पर विनियम 13 के उल्लंघन में कोई पहचान चिन्ह धारित किए बिना कोई जलयात्रा करता है तो मास्टर और फर्म प्रत्येक प्रथम बार ऐसे जुर्माने से जो दो सौ पचास रुपये तक का हो सकेगा, और निरन्तर उल्लंघन की दशा में चार सौ रुपये तक के जुर्माने से दण्डनीय होगा ।
34. जलमार्ग सीमाओं का अनुपालन करने में असफलता के लिए शास्ति — जलयान का मास्टर यह सुनिश्चित करने में असफल रहता है कि उसके जलयान की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई और डुबाव और जलयान की गति तथा कन्वाय विनियम 14 (क) के उल्लंघन में है तो वह ऐसे जुर्माने से, तीन सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।

35. जलयान के किनारों से परे किसी वस्तु का प्रक्षेपण करवाने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर जलयान के किनारों से परे किसी वस्तु का प्रक्षेपण करवाता है जो किसी अन्य जलयान या विनियम 14 (ख) के उल्लंघन में संस्थापन को खतरा हो सकता है वह ऐसे जुर्माने से, चार सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
36. ऊपरि विमा संबंधी स्थोरा के लिए सुरक्षा अपेक्षाओं के अनुपालन करने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर विनियम 14 (ग) के उल्लंघन में ऊपरि विमा संबंधी स्थोरा के अभिवहन के लिए सुरक्षा अपेक्षाओं का अनुपालन करने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से, तीन सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
37. किसी पत्तन में अभिहित क्षेत्र से बाहर जलयान का लंगर लगाने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर अपने जलयान को किसी पत्तन के भीतर विनियम 15 के उल्लंघन में ऐसे क्षेत्र में जो उस प्रयोजन के लिए अभिहित नहीं है, मूर करता है या लंगर लगाता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो प्रथम बार सौ रुपये तक का हो सकेगा और उल्लंघन के जारी रहने की दशा में प्रतिदिन सौ रुपए तक हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
38. अनुचित मूरिंग के लिए शास्ति — यदि किसी स्थिर जलयान, बेड़े या प्लवन उपस्कर का स्वामी या मास्टर लंगर लगाने में असफल रहता है या तरंगों को सहने के लिए जलयान को काफी मजबूती से बांध देता है और विनियम 16 के उल्लंघन में जलस्तर में परिवर्तन करता है तो, वह ऐसे जुर्माने से, जो पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
39. अनिवार्य पाइलट कार्रवाही के लिए नदी का अनुपालन करने में विफल रहने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर राष्ट्रीय जलमार्ग पर ऐसे किसी नदी की सीमा पर जहां सक्षम अधिकारी द्वारा वर्गीकृत रूप में पाइलट कार्रवाही अनिवार्य है, विनियम 17 के उल्लंघन में जलयात्रा करता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
40. मास्टर को दिए गए अनुदेशों का अनुपालन करने में असफल रहने के लिए शास्ति — यदि जलयान का मास्टर विनियम 18 के उल्लंघन में उसे दिए गए किन्हीं अनुदेशों का अनुपालन करने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो प्रत्येक उल्लंघन के लिए पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।
41. स्वामी को दिए गए अनुदेशों का अनुपालन करने में असफल रहने के लिए शास्ति — यदि जलयान का स्वामी विनियम 19 के उल्लंघन में उसे दिए गए किन्हीं अनुदेशों का अनुपालन करने में असफल रहता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो प्रत्येक उल्लंघन के लिए पांच सौ रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।

42. अन्तर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 के उपबन्ध का लागू होना — इसमें पूर्व वर्णित किसी बात के होते हुए भी, अन्तर्देशीय जलयान अधिनियम, 1917 (1917 का 1) के अध्याय 7 के उपबन्ध से यथा आवश्यक परिवर्तनों सहित ऐसे सभी यंत्र नोदित जलयानों को जो राष्ट्रीय जलमार्ग पर जल यात्रा कर रहे हैं, इस प्रकार लागू होंगे कि किसी अन्तर्देशीय जलमार्ग पर यंत्र नोदित जलयानों को लागू होते हैं ।
43. ऐसे अपराधों के दण्ड के लिए उपबन्ध जिनके लिए अन्यथा नहीं किया गया है — यदि कोई व्यक्ति, इन विनियमों में से किसी विनियम का इसके लिए किसी विनिर्दिष्ट शास्ति का उपबन्ध नहीं किया गया है, उल्लंघन करता है तो वह ऐसे जुर्माने से, जो दो सौ पचास रुपये तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा ।

एस. एस. पौडियन, सचिव

[विज्ञापन III/IV/306/04-असा.]

उपाबन्ध — 1

(विनियम 3 देखें)

जलमार्ग का चिन्हांकन

अ. बोया पद्धति और जलमार्ग का चिन्हांकन —

- (i) बोया पद्धति की दिशा
बोया पद्धति की दिशा निम्नानुसार परिभाषित की जाएगी —
- (क) नाविक द्वारा समुद्री ली गई साधारण दिशा जब वह समुद्राभिमुख से बन्दरगाह, नदी या ऐस्चरी या जलमार्ग पर पहुंच रहा है,
- (ख) गैर ज्वारीय नदियों के मामले में नदी के प्रवाह के विपरीत दिशा,
- (ग) वह दिशा जिसमें ऐस्चरी के मामले में किलोमीटर ऋंखला में वृद्धि होती है,
- (ii) पत्तन हस्त चिन्ह —
ये चिन्ह जल सरणी के बाईं दिशा को उपदर्शित करते हैं,

दिन के दौरान — लाल बोया, अधिमानतः (सी ए एन) बेलनाकार या लाल स्पेयर्स और बोयों पर लाल बेलनाकार अग्र चिन्ह अनिवार्य है यदि वे बेलनाकार नहीं हैं,

चिन्ह

चिन्ह

चिन्ह

चिन्ह

रात के दौरान — किसी भी प्रकार का आवर्ती लाल प्रकाश

(iii) स्टारबोर्ड हस्तचिन्ह

ये चिन्ह जलसरणी के दाईं साइड को उपदर्शित करते हैं ।

दिन के दौरान — हरा बोया अधिमानतः भुण्डाकार/या हरा स्पेयर ।

स्पर और बोय पर ऊपर की ओर हरा भुण्डाकार शीर्ष चिन्ह बिन्दु अनिवार्य है यदि वे भुण्डाकार नहीं हैं ।

रात के दौरान — किसी प्रकार का आवर्ती हरा प्रकाश

ला — लाल

ह — हरा

(iv) अलग थलग खतरा चिन्ह

कोई अलग थलग खतरा चिन्ह ऐसा चिन्ह है जो किसी अलग थलग खतरा चिन्ह ऐसे स्थान पर सृजित किया गया है उस पर उसके ऊपर मूर किया गया है जिसके चारों ओर नाव्य जल है ।

अलग थलग खतरा चिन्ह का वर्णन

ख	ख	क) शीर्ष चिन्ह : एक दूसरे के ऊपर दो काले घेरे
ख	ख	ख) रंग : एक या अधिक रंग चौड़े क्षितिजीय लाल बैंडों से युक्त काला
चिन्ह	चिन्ह	ग) आकार : वैकल्पिक, इनका पार्श्विक चिन्ह से टकराव न हो, अधिमानित स्तंभ या स्पर

रात के दौरान : प्रवाह पूर्ण सफेद प्रकाश — समूह फ्लैशिंग

ला — लाल

का — काला

आ. परम्परागत चिन्ह

(i) चिन्हांकन की दिशा

परम्परागत चिन्ह बांस की पट्टियों से बनाए जाते हैं और केवल नदियों में उपयोग किए जाते हैं । चिन्हांकन के निर्देश नदी के अनुप्रवाह की ओर होंगे ।

(ii) जलसरणी के आरम्भ में और अन्त में बांस की चटाई के चिन्ह

दाईं ओर चिन्ह

बाईं ओर चिन्ह

चिन्ह

चिन्ह

चिन्ह

(iii) बीच में बांस के चिन्ह और चिन्ह

दाईं ओर चिन्ह
(बाल चिन्ह)

बाईं ओर चिन्ह
(बांस की पट्टी चिन्ह)

चिन्ह

चिन्ह

चिन्ह

(iv) जलमग्नता के अधीन स्नैग चिन्ह (चूने से पेंट किया गया)

चिन्ह

क) ऐसे स्नैग उपदर्शित करना जिसे किसी भी ओर से कास किया जा सके ।

चिन्ह

ख) बाईं ओर रखा जाने वाला स्नैग

चिन्ह

ग) दाईं ओर रखा जाने वाला स्नैग

(v) जलसरणी का बंद करना

चिन्ह

उपाबंध — II**(विनिमय 4 देखें)****इ. चिन्ह और संकेत**

1. दिन और रात्रि चिन्हांकन
जहां विहित चिन्ह में निम्नलिखित सम्मिलित हैं :-

- (क) केवल प्रकाश, बत्तियां दिन रात उपयोग में लाई जा सकेंगी ;
- (ख) केवल बोर्ड, बोर्ड का उपयोग रात्रि चिन्ह के रूप में किया जा सकेगा यदि यह प्रदीप्त हैं, बोर्ड 1.5 मीटर X 1 मीटर न्यूनतम आकार की चतुर्भुज के रूप में होंगे ;
- (ग) बोर्ड और बत्तियां, दिन के दौरान या तो बोर्ड अथवा रात्रि में प्रकाश बत्तियां उपयोग की जा सकेंगी या बत्तियां अथवा प्रदीप्त बोर्ड उपयोग में लाए जा सकेंगे ।

2. प्रकाश व्यवस्था करना —

किसी पुल, पोत घाट के पुल, जलपाश के पहुंच मार्ग, लघु नहर आदि के सेक्शनों के निम्न भाग को प्रकाशित करने के लिए रात्रि में बत्तियों की व्यवस्था की जाएगी ।

3. बत्तियों की सघनता —

इस नियम में सिफारिश की गई बत्तियां कम से कम दो किलोमीटर की दूरी से दृश्यमान होंगी और आस पास की बत्तियों से सुभिन्न होंगी ।

4. स्थिर बत्तियां —

- (i) एकल लाल बत्ती
दिवस चिन्ह

'रास्ता बंद'

कुछ जलसरणियों या जलमार्ग के खम्बों या सम्पूर्ण जलमार्ग के लिए

लाल
सफेद
लाल

एक दूसरे के ऊपर स्थापित की
गई दो लाल बत्तियां

नौपरिवहन का पूर्ण और दीर्घावधि
के लिए रोका जाना जलमार्ग, पुलों,
रुकावट या सेवाओं का बंद करना

ला

ला

(iii) एक दूसरे से पृथक् या अधिक
लाल बत्तियां

रास्ता बंद (बत्तियों के बीच)

चिन्ह

चिन्ह

(iv) एकल हरी बत्ती
दिवस चिन्ह

हरा हरा सफेद हरा

“आगे चलिए” (हरी बत्ती सदैव नाव्य
जल—सरणी के किनारे पर लगाई
जाती है)। तथापि, इस संकेत
का उपयोग उन मामलों तक निर्बन्धित
है जहां एकल हरी
बत्ती को यह उपदर्शित करने के लिए
स्पष्ट रूप से पर्याप्त है कि रास्ता खुला
है। अन्य मामले में, एक दूसरे से
पृथक् दो हरी बत्तियों के उपयोग और
रास्ता उपदर्शित करने की सिफारिश
की गई है।

(v) दो हरी बत्तियां एक दूसरे से पृथक्
हरा हरा

बत्तियों के बीच से चलिए

(vi) हरी बत्तियों के साथ-साथ या
बीच में एकल पीली बत्ती

“आगे चलिए किन्तु दूसरी ओर से
आने वाले यातायात को देखिए”
जलयान पर बत्ती की ओर बढ़
सकेंगे, जो नाव्यसरणी के ऊपर
लगाई गई है

पीला

पीला

या

सावधानी से आगे बढ़ें

(vii) किसी सफेद बत्ती के ऊपर
कोई लाल बत्ती

“धावन न करें”

लाल	आकृति
सफेद	
(viii) 12	उपदर्शित गति को पार न करें (किलोमीटर प्रति घंटा)
(ix)	जलस्तर सीमा से ऊपर निकासी
(x)	शहरी या जलसरणी की चौड़ाई सीमा

चिन्ह

स — सफेद

ला — लाल

ह — हरा

पी — पीला

का — काला

उपाबंध — III

(विनियम 10 देखिए)

तूफान चेतावनी संकेत

	दिन	रात्रि
1. चेतावनी — आप शीघ्र ही तूफान से प्रभावित हो सकते हैं	काला	लाल
2. खतरा — तूफान तुरन्त आप पर प्रभाव डालेगा	काला	लाल लाल
3. खतरा — पत्तन किसी छिद्र, ज्वारभाटा या आकस्मिक बाढ़, अचानक जलस्तर में वृद्धि और प्रत्याशित तेज तरंगों से संकटस्थ है ।	काला	सफेद लाल सफेद
4. महा खतरा — अति तीव्र तूफान से आप पर तुरन्त प्रहार होगा ।	काला	लाल लाल लाल

(ख) जलयान के प्रत्येक ओर कम से कम एक जीवन रक्षक बोया स्वतः प्रज्वलित प्रकाश प्लावन जीवन लाइन से फिट होगा जो 25 मीटर से कम लम्बी न हो, और जो किसी हुक से सुरक्षित रूप में बंधी हुई हो ।

(घ) प्रत्येक कठोर जीवन रक्षक बेड़े की इस प्रकार संरचना की जाएगी कि इसकी बनावट को मौसम की सभी दशाओं में डैक पर और जल में बनाए रखे जा सकें ।

3. जीवन रक्षक जैकटें —

कोई जीवन रक्षक जैकट निम्नलिखित अपेक्षाओं को पूरा करेगी —

क यह समुचित रूप से डिजाइन की जाएगी और उपयुक्त सामग्री की बनी होगी ।

ख यह चौबीस घंटे तक ताजा जल में 7.5 किलोग्राम की संहति को संभालने समर्थ होगी ।

ग यह किसी अशक्त या अचेतन व्यक्ति के सिर को जल से ऊपर रखने में समर्थ होगी ।

घ यह इस प्रकार से डिजाइन की जाएगी कि यथाशक्य सम्भव इसे गलती से भी पहना जाए तो सभी जोखिमों को दूर कर सके तथापि यह उलटकर पहनने योग्य होगी ।

ङ यह इसे पहनने वाले व्यक्ति के शरीर को जल में प्रवेश करने पर ऊर्ध्वाकर से कुछ पीछे की ओर हल्की आनत सुरक्षित प्लावन स्थिति में लाने में समर्थ होगी ।

च यह तेल और तेल उत्पादों तथा 50 डिग्री तक के तापमान के प्रभाव को सह पाएगी ।

छ यह सन्तरी रंग में परावर्तित होगी ।

ज इसे शीघ्रता और सहजता से पहना जाएगा और शरीर से सुरक्षित रूप से बांधी जाएगी ।

झ इसकी जेब में एक सीटी लगी होगी ।

ञ इसमें निम्न विशिष्टियां होगी —

उपाबंध IV (विनियम 18 (1) (i) देखिए)

(अन्तर्देशीय जलयानों के फलक पर वहन किए जाने वाले जीवन रक्षक साधित्रों के ब्यौरे)

1. जलयानों का वर्गीकरण

अन्तर्देशीय जलयानों को निम्नानुसार वर्गीकृत किया जाएगा

प्रवर्ग 1 सवारी जलयान

प्रवर्ग 2 फैंरी लांचर और नावें

प्रवर्ग 3 स्थोरा जलयान और वे जलयान जो श्रेणी I, II, IV और V के अन्तर्गत आने वाले जलयानों से भिन्न हैं ।

प्रवर्ग 4 गैर नोदित जलयान (बार्ज)

प्रवर्ग 5 विलास यान

2. प्रवर्ग 1 के जलयान -

2.1 प्रवर्ग 1 के प्रत्येक जलयान पर निम्नलिखित व्यवस्था होगी -

(क) उपनियम 2.2 की अपेक्षानुसार नाव (वों) की पर्याप्त संख्या और फलक पर सवारियों की और कर्मीदल की कुल संख्या को समायोजित करने वाले जीवन रक्षक बेड़े

(ख) (i) फलक पर सवारियों और कर्मीदल के 50 प्रतिशत के लिए डब्ल्यू सी सी में एक जीवन रक्षक जैकेट और एन डब्ल्यू 1 और 2 की बाबत शत प्रतिशत

(ii) बालकों के लिए जीवन रक्षक जैकेट अभिवहन के लिए प्रमाणित कुल सवारियों की संख्या के 10 प्रतिशत के लिए इस धारा के प्रयोजन के लिए बालक ।

(ग) 25 मीटर लम्बाई तक के जलयान के लिए कम से कम 4 जीवन रक्षक बोय, 24 से 25 मीटर लम्बाई के जलयान के लिए 6 जीवन रक्षक बोय और 45 मीटर लम्बाई से अधिक के जलयान के लिए 8 जीवन रक्षक बोय । यदि जलयान रात्रि में नौपरिवहन करता है तो

प्रदाय किए गए जीवन रक्षक बोयों में से कम से कम दो स्वतः प्रज्वलित प्रकाश से सज्जित होंगे ।

2.2 लघु यानों के सिवाय 25 मीटर तक के लम्बाई वाले प्रत्येक जलयान के लिए 10 व्यक्तियों को ले जाने की न्यूनतम क्षमता वाली कम से कम एक नाव की और 25 मीटर लम्बाई के अधिक के जलयान के लिए कम से कम दो नावों का व्यवस्था की जाएगी । नाव पर आरम्भ करने के लिए आवश्यक डेबिट की व्यवस्था की जाएगी । नावें जलयान की प्रत्येक ओर समान रूप से चलाई जाएंगी यदि एक से अधिक नाव की व्यवस्था की गई है ।

3. वर्ग 2 के प्रत्येक जलयान —

3.1 वर्ग 2 के प्रत्येक जलयान पर निम्नलिखित व्यवस्था होगी :—

(क) उपनियम 3.2 की अपेक्षानुसार नाव (वों) की पर्याप्त संख्या और फलक पर सवारियों और कर्मीदल की कुल संख्या को समायोजित करने वाले जीवन रक्षक बेड़े,

(ख) (i) फलक पर सवारियों और कर्मीदल के 50 प्रतिशत के लिए डब्ल्यू0 सी0 सी0 में एक जीवन रक्षक जैकेट और एन डब्ल्यू 1 और 2 के बाबत शत प्रतिशत,

(ii) बालकों के लिए जीवन रक्षक जैकेट अभिवहन के लिए प्रमाणित कुल सवारियों की संख्या के 10 प्रतिशत के लिए इस धारा के प्रयोजन के लिए बालक से 30 किलो से नीचे वजन वाले व्यक्ति अभिप्रेत हैं ।

(ग) कम से कम आठ जीवन रक्षक बोया जिनमें से कम से कम दो स्वतः प्रज्वलित प्रकाश से सज्जित होंगे यदि जलयान का रात्रि में नौपरिवहन किया जाता है ।

3.2 25 मीटर से 45 मीटर लम्बाई के बीच के प्रत्येक जलयान के लिए न्यूनतम 10 व्यक्तियों को ले जाने वाली कम से कम एक नाव की और 25 मीटर लम्बाई के अधिक के जलयान के लिए कम से कम दो नावों का व्यवस्था की जाएगी । नाव पर आरम्भ करने के लिए आवश्यक डेबिट की व्यवस्था की जाएगी । नावें जलयान की प्रत्येक ओर समान रूप से चलाई जाएंगी यदि एक से अधिक नाव की व्यवस्था की गई है । ऐसे जलयानों के लिए, जो 5 किलोमीटर से अनधिक के एकल निरन्तर जलयानों के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं । सक्षम अधिकारी नावों के

स्थान पर बोया साधित्रों या जीवन रक्षक बोयों का उपयोग करने की अनुज्ञा दे सकेगा ।

4. वर्ग 3 के जलयान —

वर्ग 3 के प्रत्येक जलयान पर निम्नलिखित व्यवस्था होगी —

- (क) 10 मीटर से अधिक के जलयान के लिए सभी कर्मीदल को समायोजित करने के लिए कम से कम एक जीवन रक्षक बेड़ा,
- (ख) फलक पर प्रत्येक कर्मीदल या व्यक्ति के लिए एक जीवन रक्षक जैकिट,
- (ग) 25 मीटर तक की लम्बाई वाले जलयान के लिए कम से कम 2 जीवन रक्षक बोया और 25 मीटर से अधिक की लम्बाई के जलयान के लिए 4 जीवन रक्षक बोया जिनमें से एक स्व प्रज्वलित प्रकाश से सज्जित होगा यदि जलयान रात्रि में नौपरिवहन करते हैं ।

5. वर्ग 4 के जलयान —

वर्ग 4 के प्रत्येक मानव संचालित जलयान के लिए निम्नलिखित व्यवस्था की जाएगी —

- (क) कम से कम दो जीवन रक्षक बोया जिनमें से एक स्व प्रज्वलित प्रकाश से सज्जित होगा यदि जलयान का रात्रि में नौपरिवहन किया जाता है,

- (ख) फलक पर प्रत्येक कर्मीदल के लिए एक जीवन रक्षक जैकिट

6. वर्ग 5 के जलयान —

10 मीटर लम्बाई वाले प्रत्येक वर्ग 5 के जलयान पर प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जीवन रक्षक जैकिट होगी । 10 मीटर से अधिक के जलयान पर पर्याप्त जीवन रक्षक बेड़ा/जीवन रक्षक बोया फलक पर सभी व्यक्तियों के लिए होगा । तथापि, वर्ग 5 के सभी जलयानों पर कम से कम 2 जीवन रक्षक बोया होंगे जिनमें से एक स्व प्रज्वलित प्रकार का होगा यदि जलयान रात्रि में नौपरिवहन करता है ।

7. तकनीकी अपेक्षाएँ —

इन विनियमों के उपबन्धों के अनुसार उपलब्ध कराया गया प्रत्येक जीवन रक्षक अनुसूची 1 की अपेक्षाओं को पूरा करेगा ।

8. नौभरण —

इन नियमों के उपबन्धों के अनुसार उपलब्ध कराया गया प्रत्येक जीवन रक्षक साधित्र यथा लागू अनुसूची 1 की अपेक्षाओं के अनुसार नौभरण किया जाएगा ।

9. प्रथा का संप्रदर्शन —

वर्ग 1 और वर्ग 2 के प्रत्येक जलयान पर जीवन रक्षक साधित्रों की सूची और उनके उपयोग के संबंध में अनुदेश सहजदृश्य स्थानों पर संप्रदर्शित किए जाएंगे ।

10. छूट —

जलयानों या जलयानों के वर्ग में छूट में यह उपबन्ध है कि वह (I.V अधिनियम, 1917) की अपेक्षा का अनुपालन करता है, जिसका नौतल जो इन विनियमों के प्रवृत्त होने से पूर्व सन्निर्माण के पश्वर्ती प्रक्रम पर है, जीवन रक्षक नावों के अभिवहन के लिए उपबन्ध के साथ अनुपालन की तारीख के दो वर्ष पश्चात तक छूट दे सकेगी परन्तु यह कि इसके बदले जीवन रक्षक बेड़े फलक पर उपलब्ध करा दिए जाते हैं ।

उपाबंध 4 की अनुसूची 1

जीवन रक्षक साधित्रों के लिए विनिर्देश

1. नावें —

(क) सभी नावें अच्छी तरह डिजाइन की गई होंगी और ऐसे आकार और अनुपात में होंगी कि वे पर्याप्त रूप से स्थिर हों और शीर्षोत्तर हों जब वे व्यक्तियों और उपस्कर के पूर्ण भार का अभिवहन कर रही हों । इसकी स्थिरता तब पर्याप्त समझी जाएगी यदि नाव एक की ओर अधिकतम अनुज्ञेय संख्या से आधे व्यक्ति खड़े हों तो वहां 100 किलोमीटर से अन्यून का शीर्षोत्तर शेष रहता हो ।

(ख) सभी नावें व्यक्तियों और उपस्करों के अपने पूर्ण भार सहित जल में उतारे जाने के लिए सक्षम होंगी । वे ऐसी प्रबलता की होंगी कि यदि 25 % से अति भार के अधीन रहते हुए भी उनमें कोई स्थायी विरूपण न हो ।

2. जीवन रक्षक बेड़े —

(क) प्रत्येक जीवन रक्षक बेड़े पर सुरक्षित रूप से गांठ फिट की हुई होंगी ।

(ख) प्रत्येक जीवन रक्षक बेड़े की इस प्रकार संरचना की जाएगी कि उसमें समाहित इकाइयों में 0.096 एम 3 की वायु का घनत्व समाविष्ट हो ।

(या कठोर जीवन रक्षक बेड़ों की दशा में समतुल्य बाय पद्धति युक्तियाँ) प्रत्येक व्यक्ति के लिए जिसे इसके अभिवहन के लिए अनुज्ञात किया गया है, जो कम से कम 0.372 वर्गमीटर के किसी डैक के हैं ।

(ग) जीवन रक्षक बेड़े की संरचना इस प्रकार की जाएगी कि उन्हें जल में उच्चतम डैक से छोड़ा जाता है तो न तो जीवन रक्षक बेड़ा और न ही उसके उपस्कर को कोई नुकसान पहुंचे ।

(घ) प्रत्येक कठोर जीवन रक्षक बेड़े की इस प्रकार संरचना की जाएगी कि इसकी बनावट को मौसम की सभी दशाओं में डैक पर और जल में बनाए रखे जा सकें ।

3. जीवन रक्षक जैकिटें —

कोई जीवन रक्षक जैकिट निम्नलिखित अपेक्षाओं को पूरा करेगी —

(क) यह समुचित रूप से डिजाइन की जाएगी और उपयुक्त सामग्री की बनी होगी ।

(ख) यह चौबीस घंटे तक ताजा जल में 7.5 किलोग्राम के संहति को संभालने में समर्थ होगी ।

(ग) यह किसी अशक्त या अचेतन व्यक्ति के सिर को जल से ऊपर रखने में समर्थ होगी ।

(घ) यह इस प्रकार से डिजाइन की जाएगी कि यथाशक्य सम्भव इसे गलती से भी पहना जाए तो सभी जोखिमों को दूर कर सके तथापि यह उलटकर पहनने योग्य होगी ।

(ङ) यह इसे पहनने वाले व्यक्ति के शरीर को जल में प्रवेश करने पर ऊर्ध्वाधर से कुछ पीछे की ओर हल्की आनत सुरक्षित प्लावन स्थिति में लाने में समर्थ होगी ।

(च) यह तेल और तेल उत्पादों तथा 50 डिग्री तक के तापमान के प्रभाव को सह पाएगी ।

(छ) यह सन्तरी रंग में परावर्तित होगी ।

(ज) इसे शीघ्रता और सहजता से पहना जाएगा और होगी और शरीर से सुरक्षित रूप से बांधी जाएगी ।

(झ) इसकी जेब में एक सीटी लगी होगी ।

(ञ) इसमें निम्न विशिष्टियां होंगी —

विनिर्माता का नाम

प्रकार

विनिर्माण का वर्ष

5. जीवन रक्षक बोया —

(क) प्रत्येक जीवन रक्षक बोय —

(i) 24 घंटे के लिए ताजा जल में 14.5 किलोग्राम की संहति को संभालने में समर्थ होगी ।

(ii) समुचित सामग्री की बनी होगी और तेल तथा तेल उत्पादों और 50 डिग्री तापमान तक के प्रभाव को सह पाएगी ।

(iii) यह सन्तरी रंग में परावर्तित होगी ।

(iv) इसकी संहति 6.5 किलोग्राम से अन्यून होगी ।

(v) इसका आन्तरिक व्यास 0.5 लीटर + 10% होगा ।

(vi) चारों ओर इस प्रकार रस्सी बंधी होगी जिसे कसकर पकड़ा जा सके ।

(ख) जलयान के प्रत्येक ओर कम से कम एक जीवन रक्षक बोय स्वतः प्रज्वलित प्रकाश प्लावन जीवन लाईन से फिट होगा जो 25 मीटर से कम लम्बी न हो, और जो किसी हुक से सुरक्षित रूप में बंधी हुई हो ।

उपाबंध 4 की अनुसूची 2

जीवन रक्षक साधित्रों का नौभरण और उठाई धराई

सभी जल प्लावन साधित्र और जीवन रक्षक बोय इस प्रकार रखे जाएंगे कि वे जलयान से दूर मुक्त रूप से प्लावन कर सकें ।

नावों और बेड़ों तक पहुंच के लिए उपयुक्त व्यवस्थाएं की जाएंगी ।

जीवन रक्षक साधित्रों और उनके आरम्भ करने की युक्तियों को प्रकाशित करने के लिए प्रभावी साधन उपलब्ध कराए जाएंगे ।

नावों के लिए आरम्भ की जाने वाली युक्तियाँ इस प्रकार डिजाइन और व्यवस्थित की जाएंगी कि नावों को विश्वासपूर्वक, शीघ्रता से और व्यक्तियों को खतरा पहुंचाए बिना उतारा जा सके ।

युक्तियाँ डेविट, फाल, ब्लाक और अन्य गियर इतनी प्रबलता के होंगे कि नावों को झुकाव या कटाव की प्रतिकूल दशा में किसी भी ओर सुरक्षापूर्वक उतारा जा सके ।

जीवन रक्षक साधित्र इस प्रकार नौभरित किए जाएंगे कि वे आसानी से पहुंच में हों और उन्हें यथासंभव शीघ्र आसानी से उतारा जा सके ।

NOTIFICATION

New Delhi, the 30th November, 2004

In exercise of the powers conferred by Section 35 of the Inland Waterways Authority of India Act, 1985 (82 of 1985), the Inland Waterways Authority of India, with the prior approval of the Central Government, hereby makes the following regulations for ensuring safety of navigation and shipping on the national waterways, namely :—

1. Short Title and Commencement -

- (1) These regulations may be called the National Waterway, Safety of Navigation and Shipping Regulations, 2002
- (2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.
- (3) These regulations extend to all National Waterways.

2. Definitions -

In these regulations, unless the context otherwise requires:-

- (a) "Act" means Inland Waterways Authority of India Act, 1985 (82 of 1985);
- (b) "Annexure" means Annexure to these regulations;
- (c) "Competent Officer" means an officer appointed as such by the Authority to be in charge of a Section of the National Waterway for the development, management and maintenance;
- (d) "Channel marks" includes bamboo marks, buoys and beacon.
- (e) "Convoy" means a group of vessels, floating equipment or raft towed or pushed by a mechanically propelled vessel;
- (f) "Drifting" means being driven by the current with the engine stopped;

- (g) "Ferry boat" means any vessel providing a transport service across or along a waterway;
- (h) "Inland mechanically propelled vessel" means a mechanically propelled vessel which ordinarily plies on any inland water;
- (i) "Lock" means confined section of river or canal where level can be changed for raising and lowering boats between adjacent sections by use of gates and sluices;
- (j) "Lock basin" means the approach to the lock narrowing towards the lock from upstream and downstream;
- (k) "Master" means any person not being a pilot, harbour master, berthing master, has for the time being the command or charge of a vessel;
- (l) "Mechanically propelled vessel" means every description of vessel propelled wholly or in part by electricity, steam or other mechanical power;
- (m) "Navigable channel" means the channel intended for passage of ships;
- (n) "Owner" means when used in relation to goods, includes any consignor consignee, shipper or agent for the safe custody thereof and when used in relation to any vessel, includes, any part owner, charterer consignee, mortgage or agent in charge thereof;
- (o) "Port" means an inland port;
- (p) "Small craft" means any vessel with a hull length less than 10 metres and less than 3 metres wide;
- (q) "Section" means a portion of the waterway controlled by one field headquarter;
- (r) "Terminal" means the place where the cargo and passengers change from one mode to other mode of transportation. Terminal facilities include berthing, cargo transfer, storage and ticketing and passenger rest, comfort rooms and
- (s) "Vessel" means every description of watercraft, including small craft, vessel under oars or sail, floating equipment and non-displacement craft.

CHAPTER - I**WATERWAYS AND SAFETY MEASURES ON WATERWAYS**

3. **Marking of Navigable Channel** - A navigable channel may be marked to indicate safe limits of the Channel by channel marks like bamboo marks or buoys. Details of channel marking are given in Annexure – I. In case there is night navigation marks shall be provided with light or painted with luminous paint.
4. **Traffic Signals and Signs** - Traffic Signals or Signs may be erected on the banks of the river or on any fixtures on the river to ensure safety on the navigable channel. The signs boards shall be painted with bright luminous paint. Different signals and signs are given in Annexure-II.
5. **Passage through Bridges** - When a vessel is passing under a bridge, the height of the mast or the height of the collapsed mast and that of the wheelhouse / super structure should be less than that between waterway level and the height of the road bridge.

Speed of such vessel should be regulated with reference to prevailing weather conditions and the currents likely to be experienced.

6. **Passage through locks** – (1) While navigating through the locks and lock basin, the master shall comply with any orders given to him by the lock master to ensure safety and orderly movement of ship and quick passage through the lock.
 - (2) The order of priority for passage through the lock shall be as follows:-
 - (a) Vessels of the Authority, government vessels, vessels belonging to the military and police;
 - (b) Passenger craft;
 - (c) Fishing boats;
 - (d) Cargo vessels;
 - (e) Other craft;
 - (3) The master shall take the following precautions while navigating through the lock -
 - (a) Vessels approaching a lock basin shall reduce speed and navigate with caution. Overtaking is prohibited near lock basin unless instructed to do so by the lock master.
 - (b) Vessels shall not trail anchors, cables or chains in locks or lock basin.
 - (c) While the lock is being filled or emptied, vessels shall be moored and mooring shall be so handled as to prevent bumping against the walls or gates.

- (d) Vessels shall provide adequate fenders to avoid damage to the lock structure.
- (e) Vessel under sails shall lower their sails before entering the lock.
- (4) The passage through locks shall be in the order of arrival of the vessels in the lock basin.
- (5) *Notwithstanding anything contained in Section 6 (2) any vessel expressly granted priority of passage by the Authority shall have priority for locking or unlocking.*
- 7. **Reduction of speed in certain circumstances** - (1) Every vessel shall regulate their speed to avoid creating excessive wash or suction likely to cause damage to stationary or other moving vessels or structures.
(2) In particular the vessel shall reduce speed in good time, but without losing the steering way required for safety:
 - (a) out side port entrances;
 - (b) near vessels made fast to the bank or to a landing stage loading or discharging cargo;
 - (c) near vessels lying at normal stopping places.
- 8. **Drifting of a vessel on the National Waterway** - Drifting of a vessel in the National Waterway unless authorized by the Competent Officer, is prohibited.
- 9. **Crossing of navigable channel by ferry vessels** - While crossing the navigable channel, the ferry vessels shall keep at such distance from vessels or rafts moving along the navigable channel, so that the latter are not obliged to change their course or reduce speed.
Provided that ferry vessels, under special circumstances may be granted priority of passage across the navigable channel by the Competent Officer and such vessel shall exhibit a green around light by night and a green flag by day, and shall have right of way as the circumstances permit.
- 10. **Navigational and meteorological information** - Competent Officer shall arrange for dissemination of information on storm, flash flood, channel depth and dangers in navigation by issuing river notices, publishing river charts and displaying appropriate cautionary signals as given in Annexure-III at the river ports.

CHAPTER – II

SAFETY OF VESSELS

- 11. **Certification of Survey and Registration** - Every certificate of registration and every certificate of survey issued in respect of a mechanically propelled vessel under the Merchant Shipping Act, 1958, the Coasting Vessels Act, 1938, the Canals and Public Ferries Act, 1890 (Madras Act II of 1890) and the Inland Vessels Act, 1917 shall be valid and

effective as a certificate of registration or certificate of survey as the case may be, for making voyage in the national waterways.
Provided that the certificate of survey shall be suitably endorsed by the Competent Officer having regard to the safety requirements as per regulations.

12. **Certificate of Competency** - Certificate of competency or certificate of service as master, serang, engineer and engine driver issued under the Merchant Shipping Act, 1958 and the Inland Vessels Act, 1917, shall be valid for making voyage in national waterways.
13. **Identification marks on vessels** - (1) Every vessel except a small craft shall bear the following identification marks on its hull.
 - a) Name of vessel, (Name shall be inscribed on each bow and stern of the vessel).
 - b) Registration No.
 - c) Place of registry and year of registration
 - (2) The identification mark shall be inscribed with letters not less than 20 cm in height and 2 cm. wide and shall be painted in light colour on a dark background or in a dark colour on a light background.
 - (3) In addition to the identification marks, every vessel shall display on a fixed board, exhibited on the upper deck, the following information
 - a) gross registered tonnage
 - b) maximum permissible number of passengers
 - c) name of the owner
 - d) date of last survey
 - (4) Every vessel shall have the load line marked at least for one meter amidship on both sides and draught scale marked in meters and decimeters at both ends of the vessel.
 - (5) Every small craft shall have its registration No. and name of owner inscribed on both sides of the vessel.
 - (6) Every craft shall have its registration number or the name of the owner, or both, exhibited on a wide board at a conspicuous part of the craft.
14. **Vessels to ply with certain conditions for movement on national waterways** - Vessels making voyage in the national waterways shall;
 - (a) ensure that the length, breadth, height, draught and speed of the vessel, convoys, and side by side formations are suitable and in accordance with the limits as specified by the Competent Officer from time to time.
 - (b) ensure that no object is allowed to project beyond the sides of the vessel or raft that would constitute a danger to other vessels, rafts, floating establishments or installations on or adjacent to the waterway or channel except under the condition specified at (c).
 - (c) ensure strict compliance of the safety requirements for carriage of over dimensional cargo as specified by the competent officer in each case.

15. **Conditions relating to mooring or anchoring of vessels in port area** - No vessel shall be moored or anchored within a port except in areas designated for such purposes by the Competent Officer.
16. **Stationary Vessels** - All stationary vessels, rafts and floating equipments must be anchored or made fast securely enough to withstand the current in such a way that they can adjust to the changes in water level.
17. **Pilotage** - (1) The Competent Officer shall:
- (a) classify the river stretch where pilotage shall be compulsory and where the pilotage shall be optional.
 - (b) arrange positioning of experienced pilots and
 - (c) provide services of the pilot to the vessels in areas where pilotage is declared compulsory.

CHAPTER - III

NAVIGATIONAL SAFETY AND THE RESPONSIBILITY OF THE MASTER AND THE OWNER

18. **Instructions to the Master** - (1) The master shall be responsible for ensuring that the vessel is river worthy. He should follow the regulations relating to the safety measures for navigation in particular:
- (a) take all precautions required to exercise vigilance and to avoid damage to the vessel, installations in the national waterway and avoid causing obstructions to shipping and navigation;
 - (b) to avoid imminent danger, take all steps required by the situation (according to the general practice of seamanship) even if this entails departing from these regulations;
 - (c) be responsible for compliance with the rules or regulations applicable to his vessel and his crew and to the vessels in tow, while his vessel is engaged in towing of other vessels;
 - (d) ensure possession of a valid certificates of registration and survey of the vessel and valid certificate or licence by the crew, ships article or the crew list, ships log and engine log;
 - (e) ensure that at no time the vessel is over loaded or carried more than the number of passengers it is certified to carry;
 - (f) ensure that dangerous goods or explosive materials are carried on board as authorized by Competent Authority and procedures and safety precautions as per the Explosives Rules, 1983 are taken for carrying of such goods or material onboard;
 - (g) on sighting a vessel or raft which has suffered an accident endangering persons or the vessel or threatening to obstruct the channel, give immediate assistance to such vessels without endangering safety of his own vessel;
 - (h) in case of any marine casualty, give warning to the approaching vessels to enable them to take necessary action in good time and steer clear of the channel when in danger of sinking or goes out of control;

- (i) ensure that life saving appliances as specified in annexure IV are carried onboard, in good condition and in a position available for immediate use;
 - (j) ensure that no time the vessel discharge in the waterway except at places designated by the Competent Officer, raw sewage, oily substances garbage etc.
- (2) The master of a passenger vessel shall display the disposition and use of life saving appliances carried onboard and demonstrate the use of life jackets before commencement of journey;
- (3) The master shall ensure that all the navigational aids, fire fighting and flooding control appliances are on board in proper working condition and in a position available for immediate use and cause regular conduct of exercises to his crew for the efficient use of such appliances;
- (4) The master shall make immediate report to the nearest competent officer on -
- (i) sighting of any other vessel in distress;
 - (ii) grounding or sinking of the vessel;
 - (iii) outbreak of fire or flooding in his vessel;
 - (iv) damage caused to any waterway installations or permanent structures;
 - (v) observing uncharted obstruction or failure of navigational aid is noticed;
 - (vi) falling over board of any object which may become an obstruction or danger to navigation;
 - (vii) spillage of oil into National Waterway;
 - (viii) piracy or theft onboard.
- (5) Master or persons in charge of a vessel shall give the competent officer or any person authorized by him all necessary facilities for verifying compliance with these regulations.
19. **Instructions to the Owner** - (1) Owner of the vessel shall make sure that the vessel is river worthy in all respect and has competent crew on it.
- (2) The owner shall -
- (a) ensure that the vessel does not proceed on any voyage or be used for any service unless the vessel has a valid certificate of survey in force applicable for such voyage or service;
 - (b) ensure that only qualified personnel with a valid certificate of competency certificate of service or licence are employed on board the vessel as master / serang, engineer or driver and the crew;
 - (c) ensure that the crew provided is sufficiently huge and skilled to ensure the safety on those onboard and safe navigation;
 - (d) provide insurance for his vessel against third party risks;
 - (e) arrange displaying of the distinguishing mark (registration mark) in a conspicuous place;

- (f) ensure that the certificate of registration granted in respect of any vessel shall be used only for the lawful navigation of that vessel;
 - (g) report alterations carried out on his vessel which do not correspond with the particulars relating to the vessel or the description entered in the certificate of registration to the registering authority;
 - (h) if it is an abandoned vessel, in the navigable channel, make arrangements for immediate marking of the vessel to avoid danger to other vessels;
 - (i) make arrangements for the removal of a vessel from the navigation channel as early as possible or as directed by the competent officer;
 - (j) forthwith give notice to the nearest competent officer, whenever—
 - i) a vessel has been wrecked abandoned or materially damaged;
 - ii) any casualty happening to or on board any vessel, including loss of life, material damage to any other vessel or structures;
 - iii) a vessel has spilled oil into National Waterway.
- (3) If an owner fails to remove a vessel under clause (h) of sub regulation (2), the Competent Officer shall cause the removal of such vessel and recover the cost of such removal from the owner.

CHAPTER – IV

SUSPENSION, CANCELLATION AND APPEAL

20. **Power to suspend and cancel endorsement on certificate of survey-**
- (1) The Competent Officer reserves the right to suspend forthwith the endorsement on Certificate of Survey of the vessel for a period not exceeding sixty days in the case of contravention of any of the regulation mentioned herein before at the first instance.
 - (2) In the case of repeated contravention, the Competent Officer shall have the power to cancel the endorsement on Certificate of Survey of the vessel forthwith.
21. **Appeal** - (1) Any person aggrieved by an order of the Competent Officer issued under regulation 20, may within thirty days from the date on which he receives such order, appeal against it to the officer so designated.
- (2) The officer so designated shall cause notice of every such Appeal to be given to the Competent Officer in such manner as may be prescribed and after giving an opportunity to the appellant to be heard, shall pass such order thereon as deems fit and his decision shall be final.

CHAPTER - V

PENALTIES AND LEGAL PROCEEDINGS

22. **Penalty for failure to observe navigable channel** - If the master of the vessel fails to observe the navigable channel mark in contravention of Regulation 3, he shall be punishable with fine which may extend to four hundred rupees.

23. **Penalty for failure to observe traffic signals and sign** - If the master of the vessel fails to observe any of the traffic sign or signal in contravention of Regulation 4, he shall be punishable with fine which may extend to two hundred and fifty rupees.
24. **Penalty for failure to observe overhead clearance** - If the master of the vessel fails to ascertain the overhead clearance of his vessel or fails to regulate the speed by passing through the bridge in contravention of Regulation 5, he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees.
25. **Penalty for non-compliance with this order from lock master** - If the master of the vessel fails to comply any of the order given to him by the lock master to ensure the safety and orderly movement of the vessel and quick passage through the locks in contravention of Regulation 6(1) and (2) he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees.
26. **Penalty for failure to take precaution while negotiating through lock** - If the master fails take any one of the precautions while passing through lock in contravention of Regulation 6(3), he shall be punishable with fine which may extend to three hundred rupees.
27. **Penalty for failure to regulate speed to avoid creation of excessive wash or suction** - If the master of the vessel fails to regulate the speed of the vessel to avoid creation of excessive wash or suction likely to cause damage the stationary or other moving vessel or structures in contravention of Regulation 7, he shall be punishable with fine which may extend to two hundred rupees.
28. **Penalty for causing the vessel to drift** - If the master of the vessel, not being authorized by the Competent Officer, causes his vessel to drift in contravention of Regulation 8, he shall be punishable with fine which may extend to one hundred rupees.
29. **Penalty for failure to keep safe distance** - If the master of a ferry vessel while crossing the navigable channel fails to keep such distance from vessels or rafts moving along the navigable channel, so that the later are forced to change their course or reduce speed in contravention of Regulation 9, he shall be punishable with fine which may extend to one hundred rupees.
30. **Penalty for failure to observe Navigational and Meteorological information** - If the master of the vessel fails to observe the river notices or river charts or cautionary signals issued by the Competent Officer in contravention of Regulation 10, he shall be punishable with fine which may extend to two hundred rupees.
31. **Penalty for failure to obtain endorsement on Certificate of Survey for voyage in National Waterways** - If any vessel proceeds on a voyage on National Waterway without obtaining the endorsement on Certificate of Survey in contravention of Regulation 11, the owner and the master shall each be punishable with fine which may extend to five hundred rupees.

32. **Penalty for failure to keep valid Certificate of Competency for making voyage on National Waterways** - If the vessel proceeds on a voyage on National Waterway without the Certificate of Competency in contravention of Regulation 12, the master, serang, engineer and engine driver shall each be punishable with fine which may extend to five hundred rupees.
33. **Penalty for failure to bear identification marks on vessel** - If any vessel makes a voyage on National Waterway without bearing any of the identification mark in contravention of Regulation 13, the master and the owner shall each be punishable with fine which may extend to two hundred and fifty rupees at first instance and rupees four hundred in case of continued contravention.
34. **Penalty for failure to comply with waterway limits** - If the master of the vessel fails to ensure that the length, breadth, height and draught of his vessel and speed of the vessel and convoy in contravention of Regulation 14(a) he shall be punishable with fine which may extend to three hundred rupees.
35. **Penalty for causing an object to project beyond the sides of the vessel** - If the master of a vessel causes an object to project beyond the sides of the vessel constituting a danger to other vessel or installation in contravention of Regulation 14 (b), he shall be punishable with fine which may extend to four hundred rupees.
36. **Penalty for non-compliance with safety requirement for over dimensional cargo** - If the master of the vessel fails to comply with the safety requirements for carriage of over-dimensional cargo in contravention of Regulation 14 (c) he shall be punishable with fine which may extend to three hundred rupees.
37. **Penalty for anchoring of the vessel outside the designated area in a port** - If the master of the vessel causes his vessel to be moored or anchored in area not designated for such purposes within a port in contravention of Regulation 15, he shall be punishable with fine which may extend to one hundred at first instance and rupee one hundred per day in case of continued contravention.
38. **Penalty for improper mooring** - If the owner or master of a stationary vessel, raft and floating equipment fails to anchor or make fast the vessel securely enough to withstand the current and change in water level in contravention of Regulation 16, he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees.
39. **Penalty for failure to observe the river stretch for compulsory pilotage** - If the master of the vessel makes a voyage on national waterway without a pilot on a river stretch where pilotage is compulsory, as classified by the Competent Officer, in contravention of Regulation 17, he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees.
40. **Penalty for failure to observe instruction to the master** - If the master of the vessel fails to observe any of the instructions given to him in contravention of Regulation 18, he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees for each contravention.

41. **Penalty for failure to observe instructions to the owner** - If the owner of the vessel fails to observe any of the instructions given to him in contravention of Regulation 19, he shall be punishable with fine which may extend to five hundred rupees for each contravention.
42. **Application of the provision of Inland Vessels Act 1917** - Notwithstanding anything mentioned herein before, the provisions of Chapter 7, of the Inland Vessels Act, 1917 (1 of 1917) shall also mutatis-mutandis apply to all the mechanically propelled vessels making voyage on national waterway as they apply to mechanically propelled vessels on any Inland Waterways.
43. **Provision for punishment of offences not otherwise provided for** - If any person contravening any of these regulations for which no specific penalty has been provided for, he shall be punishable with fine which may extend to two hundred and fifty rupees.

S. S. PANDIAN, Secy.

[ADVT. III/IV/306/04-Exty.]

ANNEXURE - I

(See regulation 3)

MARKING OF THE WATERWAY**A. Buoyage and marking of the waterway****(i) Direction of buoyage**

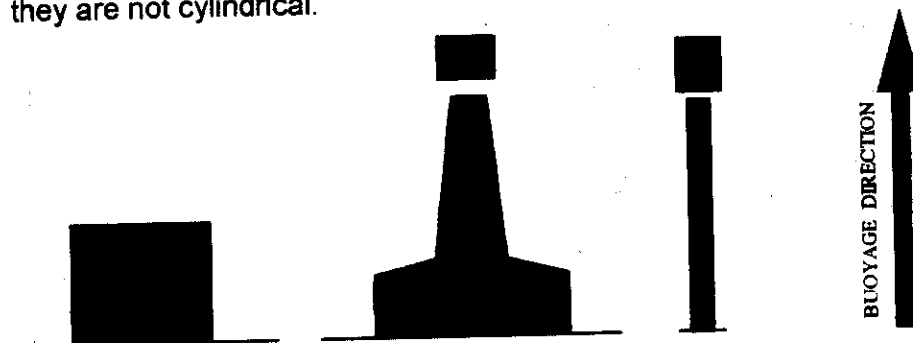
The direction of buoyage shall be defined as follows:-

- (a) The general direction taken by the mariner when approaching harbour, river or estuary or waterway from seaward.
- (b) In case of non-tidal rivers the direction against the flow of the river.
- (c) The direction in which the kilometer chainage increases in case of estuary.

(ii) Port hand Marks

These marks indicate the left side of the channel.

By day: Red Buoys, preferably cylindrical (CAN), or red spars. Red Cylindrical top mark is compulsory on the spars and on the buoys if they are not cylindrical.

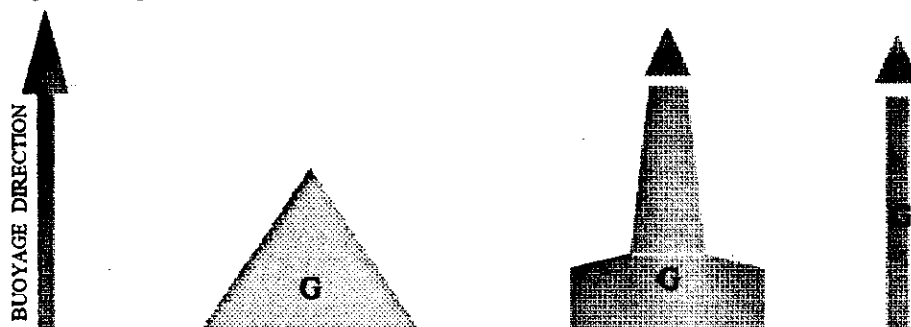


By night :- Rhythmic red lights, of any type.

(iii) Starboard hand Marks

These marks indicate the right side of the channel.

By day :- Green buoys, preferably conical, or green spars. A green conical top mark point upward is compulsory on the spars and on the buoys if they are not conical.



By night :- Rhythmic green lights, of any type.

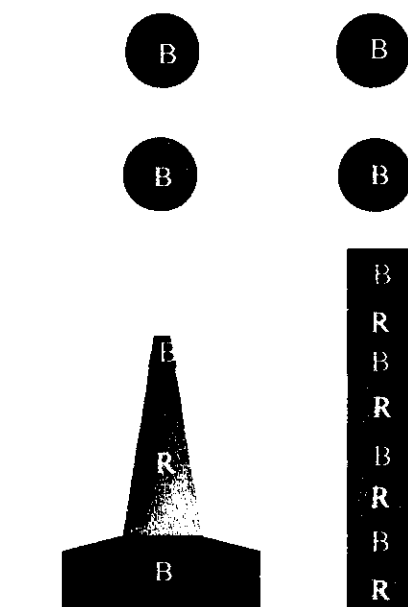
R = RED

G = GREEN

(iv) Isolated danger Marks

An isolated danger mark is a mark created on, or moored on, or above an isolated danger which has navigable water, all round it.

Description of an isolated danger mark



a) Topmark : Two black spheres, one above the other.

b) Colour : Black with one or more broad horizontal red bands.

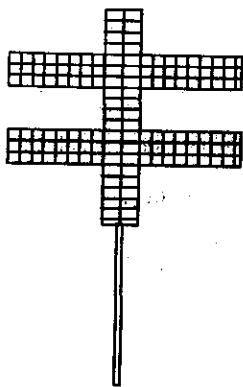
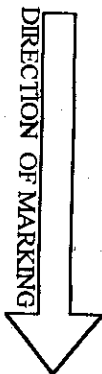
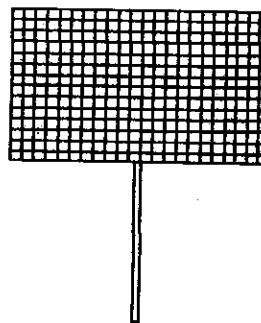
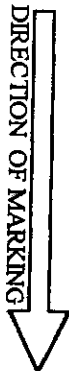
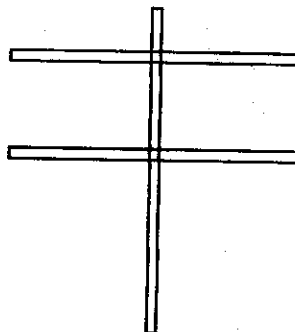
c) Shape: Optional, but not conflicting with lateral marks; pillar or spar preferred.

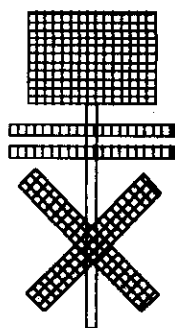
By Night: Rhythmic white light – group flashing.

R = RED B = BLACK

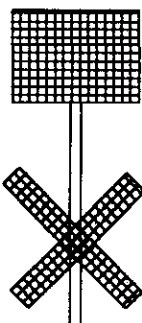
B. Conventional Marks**(i) Direction of marking**

Conventional marks are made of bamboo strips and used only in rivers. The direction of marking will be downstream the river.

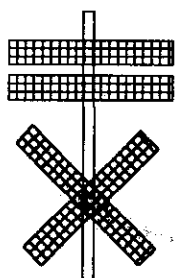
(ii) Bamboo mat marks at the beginning and end of the channel**Right Hand Marks****Left Hand Marks****(iii) Bamboo marks in between and marks****Right Hand Marks
(Ball mark)****Left Hand Marks
(Bamboo strips; mark)**

(iv) Under water snag marks (painted with lime)

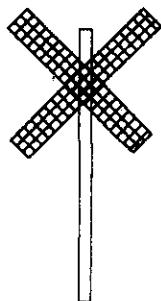
a) To indicate snag which can be crossed from either side.



b) Snag to be kept on left.



c) Snag to be kept on right.

(v) Closing of channel

ANNEXURE - II

(See regulation 4)

C. Signs and Signals**1. Day and Night marking**

Where the prescribed mark consist of :-

- (a) Light only, the lights may be used by day and by night;
- (b) Boards only, the boards may be used as night marks if illuminated. Boards shall be rectangular in shape of 1.5 metre x 1metre size minimum;
- (c) Boards and lights, by day, either boards or lights may be used; by night either lights or illuminated boards may be used.

2. Lighting

Lights may be provided at night for lighting of the lower parts of a bridge, of the piers of a bridge, of the approaches to a lock, of a section of small canal etc.

3. Intensity of lights

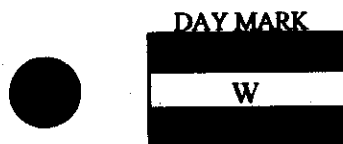
The lights recommended in this rules shall be visible for a distance of at least 2 kms., and shall be distinct from the surrounding lights.

4. Fixed lights

- (i) Single red light

"No passage"

Either to some of the channels or arms pf the waterway, or to the whole of the waterway



Two red light placed one above the other

Complete and prolonged stoppage of navigation (blockage of waterway bridges or locks out of service)

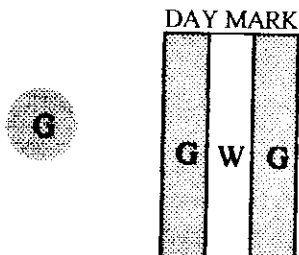


- (iii) Two or more red lights set apart



"No passage" (between the lights).

- (iv) Single green light



"GO ahead" (the green light is always placed at side of the navigable channel). The use of this signal shall however, be restricted to cases where a single green light is sufficient clearly to indicate the clear passage. In other cases, the use of two green lights set apart, and indicating the passage is recommended.

- (v) Two green lights set apart



"Go ahead between the lights".

- (vi) Single yellow light, along or between green lights



"Go ahead, but look out for traffic coming the other way" Vessels may steer towards the light, which is placed above the navigable channel.

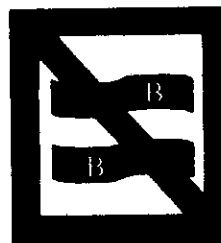
Or

Proceed with caution.

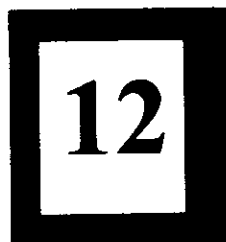
(vii) A red light above a White light



"Do not cause wash"



(viii)



Do not exceed the speed indicated (in km/hour)

(ix)



Clearance above water level limit.

(x)











Width of fairway or channel limit.

W = WHITE
 R = RED
 G = GREEN
 Y = YELLOW
 B = BLACK

ANNEXURE – III

(See regulation – 10)

STORM WARNING SIGNALS

	Day	Night
1. WARNING: A storm may affect you shortly		
2. DANGER: A storm will soon strike you		
3. DANGER: The port is threatened by a Bore- tide or flash flood; sudden rise in water level and strong current expected.		
4. GREAT DANGER: A violent storm will soon strike you.		

ANNEXURE - IV

(See regulation 18 (1) (i))

**DETAILS OF LIFE SAVING APPLIANCES TO BE CARRIED
ON BOARD INLAND VESSELS****1. Classification of vessels**

Inland vessels shall be classified as follows namely:-

Class I	Passenger vessels
Class II	Ferry launches and boats
Class III	Cargo vessels and vessels other than those falling under Class – I, II, IV & V
Class IV	Non propelled vessels (barges)
Class V	Pleasure crafts

2. Vessels of Class - I

2.1 Every vessel of Class I shall be provided with:

- (a) Sufficient number of boat(s) as per requirement of sub rule 2.2 and life rafts to accommodate total number of passengers and crew on board.
- (b) (i) One life jacket for 50% of the passengers and crew on board only in WCC and 100% in respect of NW- I and II.

(ii) Life jacket for child, for 10% of total number of persons certified to carry. For the purpose of this section, child means persons weighing below 30 kg.
- (c) At least four life buoys for vessels up to 25 metre length, six life buoys for vessel 25-45 metre length and 8 life buoys more than 45 metre length. At least two of the lifebuoys supplied shall be equipped with self igniting light if the vessel navigates at night.

2.2 At least one boat minimum carrying capacity of ten persons for every vessel up to 25 metre length except for small crafts and at least two boats for vessel of more than 25 metre length shall be provided. The boat shall be provided with necessary davit for launching. Boats are to be stowed equally on either side of the vessel if more than one boat provided.

3. Vessels of Class - II

3.1 Every vessel of Class II shall be provided with:

- (a) Sufficient number of boat (s) as per the requirement of sub rule 3.2 and life rafts to accommodate the total number of passengers and crew on board.
- (b) (i) Life jackets for 50% of the passengers and crew on board only in WCC and 100% in respect of NW - I & II.
- (ii) Life jackets for child, for 10% of total number of persons certified to carry. For the purpose of this section, child means person weighing below 30 kg.
- (c) At least eight life buoys of which at least two shall be equipped with self igniting light if the vessel navigates at night.

3.2 At least one boat with minimum carrying capacity of 10 persons for every vessel between 25 metre to 45 metre length and two boats for every vessel of more than 45 metre length shall be provided. Boat shall be provided with required davit for launching. If more than one boat supplied they may be stowed on either side of the vessel. For vessels used for single continuous voyages not exceeding 5 kms., the competent officer may permit use of buoyant apparatus or life buoys in lieu of boats.

4. Vessels of Class - III

Every vessel of Class III shall be provided with:

- (a) At least one life raft to accommodate all crew for vessel over 10 metre.
- (b) One life jacket for each crew or person on board.
- (c) At least two life buoys for vessel up to 25 metre length and four life buoys for vessel of above 25 metre length of which one shall be equipped with self igniting light if the vessel navigates at night.

5. Vessels of Class - IV

Every manned vessel of Class IV shall be provided with:

(a) At least two life buoys one of which shall be equipped with a self igniting light if the vessel navigates at night.

(b) One life jacket for every crew on board.

6. **Vessels of Class - V**

Every vessel of Class V up to 10 metre in length shall carry life jacket for each person. Vessel above 10 metre shall carry sufficient life raft / life buoys for all persons on board. However, all vessels of Class V shall carry at least 2 Life Buoys of which one to be of self igniting type if the vessel navigates at night.

7. **Technical requirements**

Every life saving appliances provided as per the provision of these regulations shall meet the requirement of Schedule- I.

8. **Stowage**

Every life saving appliances provided as per the provision of these rules shall be stowed according to the requirement of Schedule – II as far as applicable.

9. **Display of usage**

On every vessel of Class I & II, the list of life saving appliances and instruction of their use shall be displayed at conspicuous places.

10. **Exemption**

Exemption in vessels or class of vessels provided that she complies with the requirement of the I.V. Act, 1917, the keel of which is at corresponding stage of construction before the entry into force of these regulations may be exempted from compliance therewith of the provision for carriage of life boats until two years after the date of entry into force of these regulations provided that adequate life raft in lieu are provided on board.

SCHEDULE – I TO ANNEXURE IV

SPECIFICATION OF LIVE SAVING APPLIANCES

1. **Boats**

(a) All boats shall be well designed and of such shape and proportions that they sufficient stability and freeboard when carrying their full load of persons and equipment. Its stability shall be deemed to be adequate if, with half the maximum permissible number of persons standing on one side of the boat, there remains a freeboard of not less than 100 mm.

(b) All boats shall be capable of being lowered into the water with their full load of persons and equipment. They shall be of such strength that they will not suffer permanent deformation if subjected to an overload of 25 percent.

2. Life rafts

- (a) Every life raft shall be fitted with securely beackets.
- (b) Every life raft shall be so constructed as to comprise units containing a volume of air of at least 0.096 m^3 .

(or equivalent buoyancy devices in the case of rigid life rafts) an a deck are of at least 0.372 sq. m. , for every person it is permitted to carry.
- (c) The life raft shall be so constructed that if it is dropped into the water from the highest deck neither the life raft nor its equipment will be damaged.
- (d) Every rigid life raft shall be constructed as to retain its shape in all weather conditions, on deck and in the water.

3. Life jackets

A life jacket shall satisfy the following requirements:-

- (a) It shall be properly designed and made of suitable material.
- (b) It shall be capable of supporting a mass of 7.5 kg. in fresh water for 24 hours.
- (c) It shall be capable of keeping the head of an exhausted or unconscious person above water.
- (d) It shall be so designed as to eliminate so far as possible all risk of its being put on incorrectly, however, it shall be capable of being worn inside out.
- (e) It shall be capable of turning the wearer's body, on entering the water to a safe floating position slightly inclined backwards from the vertical.
- (f) It shall withstand the effects of oil and oil products and of temperatures up to 50°C.
- (g) It shall be reflecting orange in colour.
- (h) It shall be easy and quick to put on, and shall fasten securely to the body.
- (i) It shall be fitted with a whistle held in a pocket.
- (j) It shall bear the following particulars:-

Name of manufacturer
Type
Year of manufacture.

4. Life buoys

(a) Every life buoy shall:-

- (i) Be capable of supporting a mass of 14.5 kg. in fresh water for 24 hours.
- (ii) Be made of suitable materials and withstand the effects of oil and oil products and of temperatures up to 50°C.
- (iii) Be reflecting orange in colour.
- (iv) Have a mass of not less than 6.5 kg.
- (v) Have an internal diameter of 0.45metre + 10 percent.
- (vi) Be encircled with rope which can be grasped.

(b) At least one life buoy on each side of the vessel shall be fitted with self igniting light and buoyant life line which is not less than 25 meter long and which is firmly secured by a hook.

SCHEDULE II TO ANNEXURE IV**STOWAGE AND HANDLING OF LIFE SAVING APPLIANCES**

All buoyant apparatus and life buoys shall be so placed as to be capable of floating off the vessel freely.

Suitable arrangements shall be made for access to the boats and rafts.

Effective means shall be provided for lighting the life saving appliances and their launching devices.

The launching devices provided for boats shall be so designed and arranged that the boats can be lowered reliably, quickly and without danger to persons.

The launching devices davits, falls, blocks and other gear shall be of such strength that the boats can be safely lowered on either side in unfavourable conditions of list or trim.

Life saving appliances shall be so stowed that they are easily accessible and can be launched as quickly as possible.